दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

भारत वर्ष का वर्णन

मास्टर अमरनाथ जी
भूगोल तथा इतिहासाध्यापक
श्रीमद्दयानन्द हाई स्कूल
लाहौर द्वारा सम्पादित

जिसको

आर्य्य भाषा के विद्यार्थियों के लिए वर्त्तमान् समय के अनुसार हिन्दी में तैयार किया ।

फरवरी १६१७.

पंजाब प्रिंटिंग वर्क्स, लाहौर ।

द्वितीयवार २०००] [मूल्य ।-)

भूमिका

प्रिय विद्यार्थीगण ! भूगोल विषयक सात पुस्तकें इससे पूर्व आपकी भेंट कर चुका हूं। यह आठवीं है, इसमें भारतवर्ष का स... वर्णन किया गया है । यथा सम्भव पुस्तक को सरल और उपयोगी बनाया गया है, तथापि द्वितीया परिश्रम होने के कारण इसमें कई त्रुटियां रह गई होंगी ऐसा मैं जानता हूं। परन्तु यह भी आप से कहना चाहता हूं कि यदि आप इसे भली प्रकार से पढ़ेंगे तो आपको दूसरी भाषाओं में पुस्तकें देखने की कम आवश्यकता पड़ेगी। आर्य्य भाषा के प्रचारार्थ ही यह मेरा प्रयत्न है । अतएव सर्व भारतीय नरनारी को इसमें हमारी सहायता करनी चाहिए।

भ्रातृगण !

प्राचीन भारत सर्वगुणसम्पन्न था। इस में विद्या की प्रत्येक शाखा पर उत्तम से उत्तम पुस्तकें मिलती थीं। उन्हें पढ़कर यहां के नरनारी अपने कर्त्तव्यों को जानते थे। परन्तु समय की काल गति से यह सब नष्ट हो गया। अब आगे के लिए प्रयत्न करना चाहिये। भावी राष्ट्र भाषा आर्य्य भाषा होगी इसलिए इसके कोष को भरना चाहिये। इस पुस्तक के लिखने में यही विचार हमें उत्साह देता रहा है। अतः आप सब जन इस बात को दृष्टि में रख कर इन पुस्तकों के प्रचार में सहायता दें।

मास्टर अमरनाथ, भूगोलाध्यापक,

श्रीमद्दयानन्द ऐंगलो वैदिक मिडल स्कूल,

लाहौर।

विषय सूची

(२)

नं० विषय पृष्ठ

* ओ३म् *

भारतवर्ष का वर्णन

॥ भूगोल परिभाषा ॥

भूगोल—वह विद्या है, जिस में पृथिवी के स्थल और तत्सम्बन्धी वस्तुओंका वर्णन हो वह उसी स्थान का भूगोल कहलाता है। जैसे भारत वर्ष के भूगोल में भारत वर्ष का वर्णन होता है ॥

दिशा–(Direction) विशेष चार हैं।

(१) पूर्व (२) पश्चिम (३) उत्तर (४) दक्षिण।

इन के अतिरिक्त चार और दिशाएं हैं जो नीचे लिखी हुई दो २ दिशाओं के बीचमें हैं जिनको उपदिशा कहते हैं।
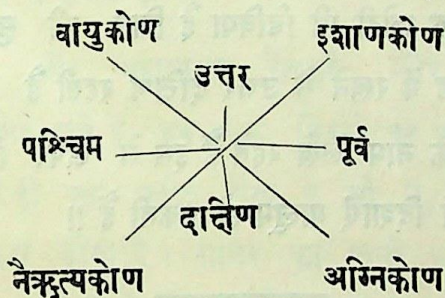
दिशा जानने की रीति ।

दिशा जानने की तीन रीतियां हैं ।

(१) प्रातः काल के समय जिस ओर से सूर्य निकलता है उस ओर को मुंह कर के खड़े हों तो मुंह के सामने पूर्व (East) होगा और पीठ की ओर पश्चिम (West) दाहिने हाथ की ओर दक्षिण (South) और बायें हाथ की ओर उत्तर (North) होगा ॥

(२) ध्रुव तारा (यह तारा रात को सर्वदा उत्तर की ओर होता है) की ओर मुंह कर के खड़े होने से मुंह उत्तर को पीठ दक्षिण की ओर, दाहिना हाथ पूर्व (East) की ओर और बायां हाथ पश्चिम (West) की ओर होगा

(३) कुतुबनमा—[Magnatic needle]

यह एक छोटी सी डिबिया है जिस की सुई उसको एक सी जगह में रखने से उत्तर दक्षिण रहती है और उस में दिशाओं के नाम लिखे रहते हैं इस से ऊपर लिखी हुई रीति से चारों दिशाएं मालूम हो सकती हैं ॥

———

चित्र में दिशा जानने की रीति।

चित्र में दिशाएं मालूम करने की विधि यह है कि यदि चित्र तुम्हारे सामने सीधा लटका हो तो सिर की ओर उत्तर (North) पांव की ओर दक्षिण, दाहिने हाथ की ओर पूर्व (East) बायें हाथ की ओर पश्चिम (West) होगा इसी रीति से एक स्थान की दिशा दूसरे स्थान से जानी जा सकती है। अर्थात एक स्थान दूसरे के ऊपर लिखा हो तो यह उस के उत्तर में जानना चाहिये॥

जल का भाग।

(१) महासागर—जल के सब से बड़े भाग को कहते हैं॥

(२) सागर—(समुद्र) जल के उस भाग को कहते हैं जो महासागर से छोटा हो॥

सागर और महासागर सैंकड़ों और हजारों मील लम्बे चौड़े होते है जब इनके किनारे पर खड़े होकर देखें तो जल ही जल प्रतीत होता है जो २, ३, ४, ८ मील तक गहरा होता है। सागर का पानी खारी होता है दरिया सागर में गिरते हैं॥

[३] खाड़ी—जल के उस भाग को कहते हैं जो तीन ओर स्थल से घिरा हो या सागर का वह भाग जो दूर तक स्थल में चला जावे ॥

[४] झील—जल के उस भाग को कहते हैं जो चारों ओर स्थल से घिरा हो ॥

झील तालाब और जोहड़ की तरह होता है, भेद केवल यह है, कि जोहड़ और तालाब केवल वर्षा के जल से भरते हैं, और लम्बे चौड़े और गहरे भी थोड़े होते हैं परन्तु झील सदैव जल से भरी रहती है, और बहुत गहरी और लम्बी चौड़ी होती है । कई एक झीलों का पानी खारी और कई का मीठा होता है ॥

[५] दरिया—(नद) जल की उस धारा को कहते हैं, जो किसी पहाड़ या झील से निकल कर समुद्र या पानी के किसी और भाग में जा गिरे ॥

[६] नाला—वर्षा का पानी जब इकट्ठा होता है और फिर बड़ी धारा बनकर बहने लगता है, तो उस को नाला

कहते हैं। कोई कोई नाले सदैव बहते रहते हैं और कई एक केवल वर्षा ऋतु में ही होते हैं पश्चात् सूख जाते हैं॥

दरिया और नाला में यह भेद है, कि दरिया का पानी पर्वतों पर की वर्षा या ढली हुई बर्फ से इकट्ठा होता है। परन्तु नाला का पानी साधारण वर्षा से आता है॥

दरिया के लाभ—दरियाओं में लोग जल पीते, स्नान करते हैं और पशू आदि जल पीते हैं। नौका के द्वारा बहुत सा माल एक जगह से दूसरी जगह लेजाते हैं। खेतों को पानी देते हैं। दरिया सदैव बहते रहते हैं, किन्तु वर्षा में पानी अधिक होजाता है॥

[७]उद्गम——(निकास) उस जगहको कहते हैं, जहां से दरिया निकलता है। और जहां दरिया गिरे, उसे मुहाना कहते हैं॥

[८] संगम--दो दरियाओं के मिलने की जगह का नाम है, जैसे "हरीके" सतलुज और व्यास का संगम स्थान है

[९] द्वयम्बू—(द्वाबा) दो दरियाओं के बीच के देश को कहते हैं॥

दक्षिण, वाम तट—जब तुम मुहाने की ओर मुख

करके खड़े होजावो तो जो धरती तुम्हारे दक्षिण हाथ की ओर होगी, वह दरिया का दक्षिणतट और जो तुम्हारे वाम ओर होगी, वह दरिया का वाम तट होगा ॥

[१०] प्रवाहस्थल----जिस जगह पर दरिया बहता है, उस जगह का नाम प्रवाह स्थल है ॥

(११) दरिया का सहायक—छोटी नदियां जो किसी बड़े दरिया में मिलकर अपना नाम खो बैठती हैं, उनको दरिया का सहायक या मुआवन कहते हैं ॥

(१२) नहर—जिधर दरिया स्वयं नहीं पहुंच सकता, उधर भूमि खोद कर उसका पानी काट कर लेजाते हैं, उसको नहर कहते हैं ॥

(१३) जल डमरूमध्य—(आबनाय) जल के उस तंग भाग को कहते हैं, जो पानी के दो बड़े भागों को मिलाता है॥

स्थल के भाग।

(१) डेल्टा—स्थल का वह भाग है जिस में नदी गिरने के समय कई एक श्रेणियों होकर त्रिकोण आकार बनावें जैसे नदी में गंगा का डेल्टा ॥

[२] महाद्वीप—स्थल का सब से बड़ा भाग है जिस में बहुत से देश हों ॥

[३] पर्वत—पत्थरों के उस खण्ड को जो भूतल से दो हजार फीट से अधिक ऊंचा हो पर्वत कहते हैं ॥

[४] पहाड़ी—पत्थरों के उस ऊंचे ढेर को जिसकी ऊंचाई दो हज़ार फीट से कम हो पहाड़ी कहते हैं ॥

लाभ—पर्वतों के पत्थरों से मकान बनाते है, फूंक कर चूना बनाते हैं। खरल कूंडी और बर्तन बनाते हैं। भांति२ के वृक्ष पौदे, फल, फूल, मेवे कन्दमूल, औषधियां उपजती हैं। सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पारा, सीसा, अभरक, लवण, पत्थर का कोयला इत्यादि अनेक रत्न पर्वतों से ही निकलते हैं। नदी नाले भी पर्वतों से निकलते हैं।

[५] ज्वालामुखी—जिस पर्वत से अग्नि जलती हुई निकले, उस पर्वत को ज्वालामुखी कहते हैं ॥

[६] द्वीप--(जज़ीरा) स्थल के उस भाग को कहते हैं जो चारों ओर जल से घिरा हो। यह समुद्र में होते हैं, इन में लोग रहा करते हैं, और वहां हरएक प्रकार की वस्तु उत्पन्न होती हैं ॥

(७) प्राय द्वीप—(जज़ीरानुमा) भूमि का वह खराड है, जिसके तीनों ओर जल और एक ओर भूमि हो ॥

(८) डमरूमध्य—(खाकनाय) स्थल के उस भाग को कहते हैं, जो स्थल के दो बड़े भागों को मिलादे ॥

(९) दर्रह या पास—उस तंग रास्ते को कहते हैं, जो दो पहाड़ या पहाड़ियों के बीच में होता है ॥

(१०) रास—स्थल का वह लम्बा सा भाग है, जो कुछ दूर तक समुद्र में चला जावे ॥

(११) बन्दरगाह—वह है जहां पर पोत आकर ठहरते हैं, जैसे कराची ॥

अपने देश की बड़ाई--मनुष्यों को अपने देश से बड़ा प्यार होता है, वह इसको पृथ्वी के सारे देशों से अच्छा जानते हैं पर हमारा भारतवर्ष कई कारणों से पृथ्वी के देशों से प्रसिद्ध है। कारण यह है कि—

१—यह प्राचीन सभ्यता का भंडार है, और इसमें प्राचीन वर्ण (धर्म) और प्राचीन फिलासफी और पदार्थ विद्या के अनुसार सब से प्राचीन ईश्वरीय ज्ञान (वेद) हैं ॥

२—इसमें सबसे पुरानी जाति भाग हैं ॥

३—इसमें पृथ्वी से अधिक सुन्दर इमारत ताज महल आगरा है ॥

४—यह सब देशों से उपजाऊ और सब देशों से स्वाभाविक तौर पर रक्षित है ॥

५—चीन के सिवाय संसार में सब से अधिक बसा हुआ है अर्थात् इसकी मनुष्य संख्या चीन से दूसरी श्रेणी पर है ॥

६—संसार भर में सबसे ऊंचा पर्वत हिमालय इसीमें है ॥

७—इस में सबसे सुन्दर कश्मीर की तराई है ॥

८—संसार में सबसे अधिक कीचड़ वाला भाग आसाम इसी में है इसमें सर्व प्रकार की जल वायु पृथ्वी पाई जाती है ॥

९—सबसे पुरानी राजधानी दिल्ली, सबसे सुन्दर नदी गंगा इसी में हैं, हमारे स्वामी अंग्रेज ब्रटिश राज्य का चमकने वाला रत्न कहते हैं । इन्हीं कारणों से हम सब तरह कह सकते हैं कि "सारे संसार से अच्छा हमारा भारत वर्ष"॥

नाम धरने का कारण ।

भरत राजा के बसाने के कारण इसका नाम भारत वर्ष था, परन्तु मुसलमानों के आने पर इनको सिन्धु नदी

पर कष्ट उठाना पड़ा इस कारण इन्होंने इसका नाम हिन्दु-स्थान रख दिया, हिन्दुस्तान शब्द का धातु सिन्धु है, क्योंकि प्राकृतिक व्याकरणों के सूत्रों के अनुसार बहुधा स को ह हो जाता है इस निमित्त सिन्धु से हिन्दु हुआ और स्थान के लगाने से हिन्दुस्थान हुआ। परन्तु आज कल बरमा बिलोचिस्तान को मिलाकर हिन्दुस्तान कहते हैं जो ठीक हिन्दुस्तान में नहीं हैं॥

भारतवर्ष कहां पर स्थापित है।

पृथ्वी दो भागों में बटी हुई है एक जल दूसरा स्थल स्थल के बड़े भाग को महाद्वीप कहते हैं जल के बड़े भाग को महा सागर कहते हैं। स्थल के एक बड़े भाग का नाम एशिया है भारतवर्ष का देश इसी महाद्वीप के दक्षिण को त्रिकोणाकार उपथित है। तीन ओर से समुद्र से घिरे होने के कारण प्रायः द्वीप कहलाता है। यही हमारा देश है॥

दिशा--चार हैं पूर्व, पश्चिम, उत्तर,दक्षिण, और चित्र पर उत्तर ऊपर दक्षिण नीचे को दहिने हाथ पूर्व बायें हाथ पश्चिम होता है॥

सीमा--उत्तर में हिमालय पर्वत, पूर्व में आसाम और ब्रह्मा की पहाड़ियां और बंगाले की खाड़ी दक्षिण में हिन्द

महासागर पश्चिम में अरब सागर बिलोचिस्तान अफगानिस्तान सुलेमान पर्वत इस देश की सीमा स्वाभाविक है जो सर्व दिशाओं से शत्रुओं को देश में नहीं आने देती। उत्तरीसीमा पर हिमालय पर्वत रक्षा करता है ! जिससे चीन देश से सहल आना नहीं होसकता दक्षिण की ओर से समुद्र पानी से भरी हुई खाई है केवल पश्चिम की ओर पर्वतों में ऐसे रास्ते हैं जिनसे शत्रु भारतवर्ष में आते रहे हैं इन दर्रों की रक्षा के लिये छावनियां बनाई गई हैं और वह यह हैं॥

१—दर्रा खैबर जिसकी रक्षा के लिये पेशावर की छावनी बनी है॥

२—दर्रा टोची जिसकी रक्षा के लिये बन्नू में छावनी है॥

३—दर्रा गोमल जिसकी रक्षा के लिये डेराइसमाईलखां की छावनी बनाई गई है॥

४—दर्रा बूलान जिसकी रक्षा के लिये कोयटे की छावनी है इससे भिन्न हिन्दूकुश और सुलेमान पर्वत भी रक्षा करते हैं अफगानिस्तान का अमीर अंग्रेजों का मित्र बन कर इस दिशा की रक्षा करता है इसी कारण इसको सरकार अंग्रेज वार्षिक कर देती है॥

आकार और विस्तार--भारत वर्ष का आकार एक उलटे त्रिकोण रूप है और विन्ध्याचल पर्वत पेटी की नाईं इसके बीच में है जिस पर उत्तरी भारत और दक्षिणी भारत की दो त्रिकोण बनी हुई हैं। इसकी लम्बाई कश्मीर से लंका तक २ हजार मील और चौड़ाई पश्चिम बिलोचिस्तान से पूर्व ब्रह्मा तक २½ ढाई हजार मील है भारत कुल दुनियां का तीसरा हिस्सा है और अंग्रजों के देश से पन्द्रह गुना, अंग्रजों के सारे राज्य का छटा भाग है।

क्षेत्रफल १८ लाख वर्ग मील अर्थात् पंजाब से तेरह गुना है

तट--भारत का तट बहुत कम टूटा हुआ है और जो टूटा हुआ है वह जहाजों को लाभदायक नहीं है जिसके कई कारण हैं।

१–खाड़ी बंगाल के उत्तर पूर्व के तट का भाग कीचड़ वाला है।

२–नदियों के गिरने के स्थान पर बहुत सी मिट्टी जम जाती है इससे देश के अन्दर जहाज नहीं आ जा सकते॥

३–तट पर अच्छे बन्दर नहीं हैं।

४–तट के पास कई स्थानों पर इतना थोड़ा गहरा है कि पोत बन्दर तक नहीं आसकते।

कराची से रंगून तक यात्रा जहाज द्वारा। और प्रसिद्ध बन्दरों का वर्णन॥

१–इसके तट पर पाहिले प्रासिद्ध बन्दरगाह **कराची** है यहां से पंजाब का गेंहूं बाहर भेजा जाता है और पंजाब से करांची तक रेल में आता जाता है।

२–यह बन्दर कोयटे और उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश के बहुत निकट है। इस कारण इंगलैंड से व्यापार की वस्तुंए और सेना बहुत शीघ्र इस बन्दर के रास्ते भेजी जा सकती हैं।

दूसरा बन्दर बम्बई--का है यह बड़ा लाभदायक बनाया गया है और इसमें यह सारे गुण अच्छे बन्दरों के आगए हैं और अच्छे बन्दर के गुण यह हैं।

१.–उसमें जहाज सहलता से आसकें, इतना बड़ा हो कि उसमें छोटे बड़े जहाज बिना कष्ट के ठहर सकें।

२-देश के दूसरे भागों से माल रेल द्वारा शीघ्र आ जा सके॥

३–कोयल की खानें पास हों।

बन्दरगवा--यह दूसरा बन्दर जो पुर्तगीजों के अधिकार में है पांचवां मंगलौर कालीकट और विजगा पट्टम

से मलाबर तटपर है यहां से अरब सागर में होते हुए अन्तरीप कुमारी में पहुंचते हैं यहां से मीनार की खाड़ी में उपस्थित होते हैं जो कि भारतवर्ष को लंका से विभाजित करती है इसके पास ही पुल आदम है जिसकी बाबत यह कथन है कि श्रीरामचन्द्रजी ने लंका में जाने के वास्ते बनाया था। अब लंका के ऊपर से होकर पूर्वी किनारे तक कारोमंडल पर पांडिचरी जो फ्रांसीसियों के आधीन है रास्ते में आयेगा इसके आगे मदरास बनावटी बन्दरगाह पर पहुंचेंगे मदरास अच्छा बन्दर नहीं है जिसके कई कारण हैं। पहिला यहां जहाज तोफान के समय रक्षा में नहीं रहता। दूसरे तट के पास इतना गहरा समुद्र नहीं है कि बड़ा जहाज आसके। तीसरा इसके समीप ऐसे देश नहीं जहां से कनक रुई इत्यादि बाहर भेजी जा सके और न यहां बड़े कारखाने हैं यहां से चलकर **कलकत्ता** आएगा कलकत्ता बड़ा भयानक बन्दर है पर इसकी उन्नति के यह कारण हैं॥

१—बंगाल बड़ा उपजाऊ देश है और इसके साथ गंगा ब्रह्मपुत्र की तराई में जो इससे मिली हुई हैं। उनके व्यापार के लिये भी कोई न कोई बन्दर अवश्य होना चाहिये जहां

से सन, चावल, चाय, अफीम, नील, बाहर भेजनी पड़ती है दूसरे बन्दर के पास रानीगंज में कोयले की खाने हैं। तीसरे कलकत्ते में बड़ी सड़कें आकर मिलती हैं जिससे देश में व्योपारिक वस्तुयें बांटी जाती हैं यहां से आगे रंगून का प्रसिद्ध बन्दर है॥

खाड़ियें।

१--खाड़ी कच्छ--उत्तर पश्चिम की ओर।

२--खाड़ी खम्बात--कच्छ के दक्षिण में।

३--खाड़ी मीनार--भारतवर्ष को लंका से पृथक करती है।

खाड़ी बंगाला—भारत के दक्षिण पूर्व में।

खाड़ी मर्तबान---ब्रह्मा के दक्षिण में।

अन्तरीप।

१–अन्तरीप कुमारी भारत का दक्षिणी सिरा।

२–अन्तरीप–नग्रीस ब्रह्मा का दक्षिणी सिरा।

जल डमरुमध्य।

१–जल डमरुमध्य पाक भारत को लंका से पृथक् करता है॥

तट।

१—पश्चिम में मालाबार।

२—कारोमंडल पूर्व की ओर।

बन्दर—कराची, बम्बई, पश्चिम में, मद्रास कलकत्ता, पूर्व में, रंगून ब्रह्मा के दक्षिण में।

सागर—अरब सागर पश्चिम में, हिन्दसागर भारत के दक्षिण में।

द्वीप--लंका द्वीप, भारतसागर में, ऐंडमन बंगाले की खाडी में, इस द्वीप को कालापानी कहते हैं। जल यहां का काला नहीं परन्तु यहां भारत के वह कैदी जिनको जन्म भर की कैद होती है भेजे जाते हैं इस कारण इसका नाम कालापानी पड़गया है। पोर्टब्लिअर यहां का प्रसिद्ध नगर है॥

धरातल--भारत के स्वाभाविक भाग—

१—हिमालय पर्वत का पर्वतीय भाग जिस में इस की पूर्वी पश्चिमी श्रेणियां भी मिली हुई हैं।

२—नदी गंगा सिन्ध का मैदानी भाग। जो हिमालय के पूर्वी पश्चिमी श्रेणियों के नीचे हैं इस में वह देश

मिला हुआ है, नदी सिन्ध-गंगा और इन दोनों की सहायक नदियें ब्रह्मपुत्र से तर होता है।

नदी गंगा और सिन्ध के मैदान की खूबियां।

१-नदियां पर्वतों से मिट्टी काट कर मैदान में डाल देती हैं।

२-पृथ्वी नर्म है और इसका कोई भाग समुद्र की तह से ७०० फीट से ऊंचा नहीं।

३-मैदान बराबर है इस कारण नदियां धीमी २ चलती हैं और व्योपार के काम आसकती हैं।

४-यह मैदान बहुत बड़ा है इसका जल और वायु गर्म हैं और हर प्रकार की इस में वनस्पति उपजती है।

५-दक्षिण की ऊंची धरातल जिस में मध्य भारत दक्षिण की धरातल है।

३ दक्षिण की ऊंची धरातल की खूबियां।

१-पृथ्वी ऊंची पत्थरों वाली कठिन है।

२-वर्षा कम होती है।

३-खेतों को नहरों और कुओं से पानी कम देते हैं।

४-जल और वायु न बहुत गर्म न बहुत सर्द है।

५-उत्पत्ति कम होती है मनुष्य संख्या कम है।

४ **तट के मैदान**—खम्भे की खाड़ी से लेकर अन्तरीप कुमारी तक का भाग जो पश्चिमी तट जिसको मालावार कहते हैं और तट के भीतर स्थापित है जिसकी चौड़ाई लगभग ४० मील है और गंगा के दाने गिरने के स्थान से लेकर अन्तरीप कुमारी तक जिसको कारों मंडल का किनारा कहते हैं पूर्वी घाट और तट के भीतर का देश भी इस में है ।

५ **ब्रह्मा का देश**—इस में उत्तर और दक्षिण के पहाड़ों की श्रेणियां हैं मध्य में मैदान हैं जो पूर्व की सीमा पर स्थापित है ।

६ पर्वतों का वर्णन ।

१—हिमालय पर्वत—यह पर्वत संसार में सब से ऊंचा है और पर्वत पायमेर से आरम्भ होकर पूर्व और पश्चिम को कमान बनाता हुआ १६०० मील लम्बा चला गया है बीच में इसकी बड़ी ऊंची चोटियां बर्फ से ढकी रहती हैं इस वर्फ के कारण से (हिम अर्थात् वर्फ और आलय अर्थात् घर) अर्थात् वर्फ का घर इसे कहते हैं, इसका ढलान उत्तर को सलामीदार होता गया है और भारत के लिए पानी का भण्डार

है और जो नदियां उत्तर से निकलती हैं वह दक्षिण की ओर भारत में आजाती हैं उत्तरी सीमा की यह रक्षा करती है। और किसी शत्रु को आने नहीं देता क्योंकि इसके दर्रे बहुत ऊंचे भयानक हैं जो संख्या में तीन हैं ॥

जो श्रीनगर शिमला, दार्जिलिंग के पास से तिब्बत को जाते हैं, और इसकी सब से ऊंची चोटी माऊंट एवरस्ट है जो २६००२ फीट ऊंची है २ कंचनचंगा ३ धौलगिरी ॥

हिमालय पर्वत से भारत को लाभ।

१—चीन और तिब्बत की ओर से कोई शत्रु भारत में आक्रमण नहीं कर सकता। इस कारण इस सीमा पर कोई छावनी नहीं है ॥

२—इस में से बहुत सी नदियें निकलती हैं जो सदा बहती रहती हैं कारण यह है कि वर्फ के पिघलने से जल सूखता नहीं ॥

३—उत्तर से जो ठंडी हवाएं आती हैं उनको रोक लेता है और समुद्र की ओर से आने वाली हवाएं इससे रुक जाती हैं इस कारण वर्षा बहुत होती है ॥

४–कई प्रकार की लकड़ियां जड़ी बूटियां धातें पाई जाती हैं ॥

५–दक्षिणी ढलान पर चाय बोई जाती है जैसे कांगड़ा, देहरादून, दार्जिलिंग, आसाम ॥

६–गर्मी की ऋतु में पर्वतों पर ऐसी गर्मी नहीं पड़ती जैसी मैदानों में इसी कारण शिमला, डलहौजी, दार्जिलिंग, नैनीताल आरोग्यतावर्द्धक स्थान हैं ॥

२–पर्वत शिवालक ३ उत्तरी पश्चिमी पहाड़ियां ।

क–हिन्दूकुश पर्वत–यह पर्वत पामेर से आरम्भ होकर अफगानिस्तान को चला गया है ॥

ख–सफेद पर्वत–उत्तर पश्चिम में भारत की सीमा पर है ॥

ग–सुलेमान पर्वत–यह पर्वत अफगानिस्तान को भारत से जुदा करता है इसकी सब से ऊंची चोटी तख्त सुलेमान है ॥

उत्तरी पश्चिमी पर्वतों की प्रसिद्ध बातें ।

१–यह पर्वत बहुत ऊंचे नहीं हैं ॥

२–लगातार नहीं है किन्तु इन में बड़े चौड़े २ रास्ते हैं इन रास्तों से प्राचीन समय में शत्रु आते रहे और

देश को बर्बाद करते रहते थे अब भी डर है परन्तु सरकार अंग्रेजी ने इन रास्तों (दर्रों) पर छावनियां बना रक्खी हैं और उत्तरी पश्चिमी देश प्रबन्ध के अनुसार पृथक् कर दिया है। अफगानिस्तान का अमीर भी इनका मित्र है वह भी इस सीमा की रक्षा के लिये सरकार से वजीफा लेता है इन पर्वतों में निम्न लिखित छावनियें और दर्रे हैं ॥

१–दर्रा खैबर–पेशावर के सामने बड़ी छावनी है और तुर्किस्तान अफगानिस्तान का व्योपारिक राह है ॥

२–दर्रा टोची–बन्नू की छावनी है ॥

३–दर्रा गोमल–पर डेराइसमाईलखां की छावनी है ॥

४–दर्रा बूलान–जिसकी रक्षा कोयटे की छावनी से की जाती है और बिलोचिस्तान का व्योपारिक राह है ॥

५–अरवली पर्वत–खम्भायत की खाड़ी के पास से उत्तर पश्चिम को चला गया है आबू पर्वत इसकी प्रसिद्ध चोटी है ॥

६--बिंध्याचल पर्वत–यह पर्वत भारत को दो भागों में बांटता है, इसको भारत की पेटी कहते हैं ॥

७--सतपुड़ा पर्वत-यह पर्वत नदी नर्बदा वा ताप्ती के बीच है ॥

८--पूर्वीय घाट के पर्वत-यह पूर्वी घाट के साथ २ अन्तरीप कुमारी तक चले गये हैं ॥

९--पश्चिमी घाट के पर्वत-यह पश्चिमी तट के साथ २ चले गये हैं ॥

पश्चिमी घाट के दर्रे-भूरघाट यह दर्रा बम्बई के सामने है । यहां से दो रेल की लाइनें निकाली गई हैं जिन में से एक मदरास को चली गई है । दूसरी मध्य भारत को इसी कारण से बम्बई ने इतनी उन्नति की है ॥

२--पालघाट का दर्रा-यह दर्रा नीलगिरी पर्वत के पास है यहां से भी एक रेल की लाइन निकाल कर मद्रास के साथ मिला दी गई है ॥

पूर्वी घाट के पर्वतों की प्रसिद्ध बातें ।

(१) यह पर्वत एक तार नहीं हैं परन्तु इनके भीतर बड़े चौड़े मैदान हैं (२) यह पर्वत पश्चिमी घाट के पर्वतों की नाईं बहुत ऊंचे नहीं । (३) इन पर्वतों में समुद्र के तट के बीच का मैदान बहुत चौड़ा है । (४) इन पर्वतों से शीत ऋतु की मौनूसन टकराकर इसी ऋतु में वर्षा करती हैं ॥

पूर्वीघाट व पश्चिमी घाट की तलयना।

पूर्वी घाट।	पश्चिमी घाट।
१–पश्चिमीघाट से आधा ऊंचा है।	१–४००० फीट चोटी है।
२–यह लगातार नहीं टूटा हुआ है।	२–लगातार फैला हुआ है
३–तट से दूर है।	३–समुद्र के निकट है।
४–उपजाऊ कम है कारण वर्षा का थोड़ा होना।	४–वर्षा अधिक होती है इस कारण हरा भरा है।
५–सागर की ओर ढलान नहीं है।	५–समुद्र की ओर ढलान है।

हिमालय पर्वत व सुलेमान पर्वत की तुलना।

हिमालय पर्वत।	सुलेमान पर्वत।
१–यह पर्वत पूर्व पश्चिम को फैला हुआ है।	१–यह उत्तर से दक्षिण को फैला हुआ है।
२–बहुत ऊंचा है।	२–कम ऊंचा है।
३–मानसून हवा आती है। वृक्ष अधिक हैं।	३–वृक्ष अधिक नहीं है, क्योंकि वर्षा कम होती है।
४–हवाओं को रोकता है।	४–पश्चिम से हवा सिन्ध

	की तराई में आसकती है ।
५—शत्रुओं को नहीं आने देता	५—इसके दर्रों से शत्रु आते हैं यही कारण है कि सरकार ने पेशावर, बन्नू डेराइसमाईलखां, कोटा के दर्रों पर छावनियां रक्खी हुई हैं ।

नदियों का वर्णन ।

भारतवर्ष की नदियां बहाव व निकास के अनुसार पांच प्रकार की हैं ॥

प्रथम--वह जो उत्तरी पर्वतों से निकलकर दक्षिण और पश्चिम के रास्ते अरब सागर में गिरती हैं जैसे सिन्ध और पंजाब की पांचों नदियां ॥

दूसरी--वह जो हिमालय पर्वत से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं जैसे ब्रह्मपुत्र, गंगा, और इनकी सहायक जैसे रामगंगा, यमुना, गोमती, घागरा आदि आदि सहायक ब्रह्मपुत्र के हैं ॥

तीसरी--वह जो दक्षिण की ओर से निकल कर उत्तर को बह कर अकेली या किसी से मिलकर गंगा में मिल गई हैं जैसे बेतवा, काली, सिन्धु, केन, चम्बल आदि ॥

चौथी—वह जो खाड़ी खम्भायत में महीनदी हैं जैसे महानदी, सांभर मती उत्तर से दक्षिण को नरबदा तापती पूर्व से पश्चिम को बहकर॥

पांचवीं--दक्षिण की बड़ी२ नदियां जो पश्चिम से पूर्व को बहकर खाड़ी बंगाला में गिरती हैं, जैसे महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा, पालार, पनार। पांच प्रकार की नदियों का वर्णन नीचे लिखा जाता है॥

उत्तरीय भारत अर्थात् नदी सिन्ध गंगा ब्रह्मपुत्र के मध्य का मैदान।

१—नदी सिन्ध की श्रेणि—इस में सिन्ध और इसकी सहायक नदियां हैं जिन में हिमालय के पश्चिमी भाग से पानी आता है निकास से लेकर नंगापर्वत तक यह पहाड़ी हैं, फिर मैदानी भाग में आती हैं और वहां इनकी चाल धीमी हो जाती है फिर इससे नीचे डेल्टे वाला भाग है इस स्थान में मिट्टी के अधिक आने से नदी कई श्रेणियों में बट जाती है दाहनी ओर से काबुल करम, टोची और गोमल इसकी सहायक नदीयां हैं बांयी ओर से चिनाब, रावी, जेहलम, को साथ लेकर सतलुज और व्यास सहित आमिलते हैं। जिस स्थान पर

यह पांचों नदियां मिलती हैं उसको पंचनद कहते हैं इन से बहुत सी नहरें निकाली गई हैं डेल्टे के बनने से गिरते समय इसकी गहराई कम है और इस नदी में जहाज कठिनता से चल सकते हैं परन्तु खेतों को सींचने के लिये लाभदायक है और इसके किनारे पर पंजाब के बड़े २ नगर यह हैं:— लद्दाख, अटक, डेराइस्माईलखां, डेरागाजीखां, सक्खर, हैदराबाद, करांची, अन्त में यह अरब सागर में गिरती हैं॥

गंगा—भारतवर्ष में सब से बड़ी और लाभदायक नदी है हिन्दू इसको पवित्र जानते हैं, इसे भागीरथी भी कहते हैं यह हिमालय पर्वत पर गंगोत्री से निकलती है यह खेती सींचने और जहाज चलाने में लाभदायक है, इसमें से दो नहरें निकाली गई हैं, प्राचीन समय में इसकी तराई सभ्यता पाई जाती थी, गंगा में हर साल पानी चढ़ता है इसके दो कारण हैं।

१—बहुतसा वर्षा का पानी नदी में आ जाता है।

२—पर्वतों पर वर्फ के पिघलने से पर्वती नदियां पानी से पूर हो जाती हैं वाईं ओर से गोमती, घागरा, गंडक और दाहिनी ओर से जमुना सोन आमिलते हैं, फिर यह १५ सौ मील बहकर मुहाने के निकट एक बड़ा सुन्दर डेल्टा बनाती

हुई बंगाला की खाड़ी में जा मिलती है, डेल्टे की भूमि को सुन्दर बन बोलते हैं। इसके किनारे पर यह बड़े प्रसिद्ध २ नगर हैं हरद्वार, कानपुर, इलाहाबाद, पटना ॥

नदी यमुना--यमुनोत्री के पर्वत से निकलती है और इलाहाबाद के समीप गंगा से मिलती है इस नदी में से भी दो नहरें निकाली गई हैं जिनसे खेती को बड़ा लाभ पहुंचा है इसके किनारे यह प्रसिद्ध नगर हैं देहली, मथुरा, आगरा ॥

ब्रह्मपुत्र--यह नदी हिमालय पर्वत में कैलास पर्वत से निकलती है फिर आसाम के उत्तर पूर्वी पर्वतों से होकर फिर भारतवर्ष में आती है इस में जल इतना आता है कि नदी संभल नहीं सकती इसलिये बहुत उजाड़ करती है। अन्त को बंगाल को तर करती हुई बंगाले की खाड़ी में गिरती है ॥

उत्तरीय भारत की नदियों की विशेष बातें।

१–पर्वतों में से बहुत शीघ्र और मैदानों में धीमी चलती हैं समुद्र में गिरते समय डेल्टा बनाती हैं यह डेल्टे उस मिट्टी से बनते हैं जो पर्वतों से लाती हैं ॥

२–खेतों को पानी देने और पृथ्वी को उपजाऊ करने के बड़े कारण हैं और इन्हीं नदियों की बदौलत उत्तरी भारत हरा भरा है ॥

३—व्यापार के बड़े रास्ते हैं इनमें से सिन्ध सब से कम लाभदायक है ॥

दक्षिणी भारत की नदियां ।

दक्षिण का ढलान पश्चिम से पूर्व को है इस कारण से बहुत सी नदियां बंगाले की खाड़ी में गिरती हैं जिनके नाम यह हैं । महानदी, गोदावरी, कृश्ना और कावेरी और दो नदियां पश्चिम की ओर बहती हैं नरबदा और तापी ॥

महा नदी—यह नदी डेल्टा बनाती हुई समुद्र में जा गिरती है इसका बहुतसा भाग जहाज चलाने के योग्य है ॥

गोदावरी—कृश्ना कावेरी का निकास पश्चिमी घाट में है जब गर्म ऋतु की पवन चलती है तो उससे पश्चिमी घाट पर बहुत वर्षा होजाती है इस कारण से इन नदियों में बाढ़ आजाती है।

नरबदा और तापी—यह नदियें खाड़ी खम्बात में गिरती हैं और शीघ्र गती से चलती हैं नरबदा को हिन्दू गंगा के तुल्य समझते हैं ॥

दक्षिणी भारत की नदियों की प्रसिद्ध बातें ।

१—सारी नदियां पश्चिम से पूर्व को बहती हैं ।

२–यह पत्थर वाली ऊंची भूमि पर बहती हैं इसलिये खेतों को पानी देने के लिये लाभकारी नहीं ।

३–इन नदियों में बहुत हड़ आता है कारण यह है कि पत्थरवाली भूमि जल को नहीं पी सकती ।

४–यह शुष्क देशों में बहती हैं और शीघ्र ही शुष्क हो जाती हैं इस कारण इसमें जहाज नहीं चल सकते ।

उत्तरी भारत की नदियां व दत्तिणी भारत की नदियों की तुलना ।

उत्तरी भारत की नदियां	दत्तिणी भारत की नदियां
१–उत्तरी भारत की नदियों में पानी पर्वतों की बर्फ से आता है यही कारण है कि ये नदियां हमेशा बहती रहती हैं ।	१–दत्तिण की नदियों में जल वर्षा से आता है जो वर्षा ऋतु में होता है इसलिये ये नदियें हमेशा नहीं बहतीं कई शुष्क हो जाती हैं ।
२–यह नदियां जहाज चलाने के योग्य हैं ।	२–जहाज चलाने योग्य नहीं ।
३–नदियों से नहरें निकाली गई हैं और इन स्थानों की भूमि नर्म है ।	३–इनकी भूमि कठिन है इनसे नहरें भी नहीं निकाली जा सकती ।

ब्रह्मा की नदियां।

१-ब्रह्मा की सबसे बड़ी प्रसिद्ध नदी ऐरावती है इसके निकास का अभी तक पता नहीं लगा इसमें जहाज चल सकता है।

२-दूसरी नदी सालून है इसके भी निकास का पता नहीं है।

भारतवर्ष की झीलें।

भारतवर्ष में प्रसिद्ध छः झीलें हैं जिनकी बाबत यह कवित्त बनी है।

छै झीलें बिच हिन्द दे जिन्हा विच रहंदे मच्छ।
वुल्लर कुल्लर सांभरा पलीकाट रन कच्छ॥

१-वुल्लर काश्मीर में है। २-झील सांभर राजपूताने में है इसमें नमक अधिक होता है। ३-चिलका झील का जल खारी है जो महानदी के डेल्टे के दक्षिण में है। ४-झील कुल्लर का पानी मीठा है॥

जल वायु।

भारतवर्ष ऐसा बड़ा देश है कि इसमें हर प्रकार की जल वायु पाई जाती है और हर जगह की जल वायु साल में

बदलती रहती है अगर तुम हिन्दुस्तान की जल वायु मालूम करना चाहते हो तो इस तरह से कर सकते हो।

१–यह स्थान मध्यरेखा से कितना दूर है॥

२–यह स्थान समुद्र से कितना परे है॥

३–कितनी ऊंचाई पर स्थापित है॥

४–इस स्थान पर कौन २ सी पवन आती हैं और वह स्थल के भाग से आती हैं या जलके भाग से॥

५–यह स्थान किसी ऐसे पर्वत पर तो नहीं जिससे कोई पवन टकराती है या जिससे नहीं टकरा सकती॥

६–वह स्थान मरु भूमि या जंगलों में या उपजाऊ मैदानों में तो स्थापित नहीं है। इस तरह से बंगाल, आसाम की जल वायु नमदार है बिलोचिस्तान, पंजाब, राजपूताना, गुजरात, मध्य भारत की शुष्क जल वायु है, और ऊंचे स्थानों की मैदानी स्थानों की अपेक्षा सर्द है, इस कारण से लोग गर्मी की ऋतु गुजारने के लिये पहाड़ी स्थानों पर चले जाते हैं और निम्नलिखित स्थान गर्मी में राजधानी बन जाते हैं॥

१–शिमला भारत सरकार और पंजाब के लाट की राजधानी है॥

२–नैनीताल संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध की॥

३—दार्जिलिंग बंगाले के लाट की ॥

४—पूना, महाबलेश्वर सरकार बम्बई की ॥

५—उटकमन्द, मदरास सरकार की ॥

वर्षा ।

उत्तर में वर्षा दो ऋतुओं में होती है, १ ग्रीष्म ऋतु २ शीत ऋतु में और वह मौनसूनों के चलने से होती है ॥

मौनसून—वह मौसमी वायु है जो छः महीने एक ओर को चलती है फिर छः महीने उसके विरुद्ध दिशा को ॥

१—ग्रीष्मऋतु की मानसून के गर्म होने के कारण उत्तरी भारत में बहुत गर्मी पड़ती है और दक्षिणी सागर में इतनी नहीं पड़ती इसलिये समुद्र की वायु कम गर्म होने के कारण भारत की ओर चलती है और यह वायु पश्चिमी घाट से टकराती है इस कारण से इस से पर्वत पर और पश्चिमी तट पर वर्षा अधिक हो जाती है इससे आगे यह समुद्र के पानी से खाली होजाती है और दक्षिण पर कम वर्षा करती है । पूर्वी तटपर पहुंचने तक बिलकुल शुष्क होजाती है इस कारण से मद्रास के निकट बहुत कम वर्षा होती है इस वायु का कुछ भाग नर्बदा की तराई में से गुजर जाता है जिससे छोटे नागपुर में वर्षा होजाती है, और कुछ भाग सिन्ध और राजपूताना से

गुजरता हुआ विना वर्षा किये सीधा हिमालय से हो कर कांगड़े की पहाड़ियों से जा टकराता है और वहां वर्षा हो जाती है सिंध व राजपूताने में कोई पहाड़ नहीं जो रोके परन्तु अरवली पर्वत पर कुछ थोड़ी वर्षा हो जाती है और दूसरी ओर से खाड़ी बंगाले की मानसून आकर ब्रह्मा के पर्वतों से टकराती है ओर उन पर्वतों पर भी वर्षा अधिक हो जाती है, इसका कुछ भाग गंगा के डेल्टे से होकर खसिया की पहाड़ियों से जाटकराता है और चरापूंजी पर इस वायु को बहुत ऊंचा चढ़ना पड़ता है इसलिये यहां ६०० इंच के करीब वर्षा होजाती है इस वायु का दूसरा भाग हिमालय पर्वत से जा टकराता है यह पर्वत भी अधिक ऊंचा है इससे भी परे नहीं जा सकती और इस पर्वत के साथ २ पश्चिम को उड़ती है इस कारण से दक्षिणी ढलान पर वर्षा अधिक होती है और उत्तरी ढलान शुष्क रहता है ज्यों २ यह वायु पश्चिम की ओर जाती है रास्ते में वर्षा बरसाते जाने के कारण शुष्क होती जाती है इस लिये पश्चिमी स्थानों में पूर्व के स्थानों की अपेक्षा वर्षा थोड़ी होती है, यहां तक कि पेशावर तक पहुंचने में बिलकुल वर्षा शुष्क होजाती है और पेशावर में बहुत कम वर्षा होती है इस वर्षा का समय मई से लेकर सितम्बर तक है ॥

२–शर्दी की मानसून हवायें–यह अक्तूबर से आरम्भ होती हैं यह हवा भूमि से आती है इससे वर्षा नहीं होती इसका वह भाग जो बंगाला की खाड़ी से गुजरता है बुखारात उठाता है और पूर्वी तट से टकरा कर मद्रास के उत्तर दाक्षिण में वर्ष जाता है है शर्द ऋतु की हवाओं से मद्रास में वर्षा अधिक होती है ॥

वर्षा के अनुसार भारत के भाग और उनका वर्णन ।

१–सिन्ध और गंगा का मैदान जिसमें गंगा के मुहाने से लेकर जेहलम नदी तक का देश और ब्रह्मपुत्र की तराई में वर्षा अधिक होती है ज्यों २ पश्चिम को जायें वर्षा कम और हिमालय पर्वत के नीचे अधिक पेर थोड़ी ।

२––तट का भाग इस म पूर्वी तट और पश्चिमी तट मिले हुए हैं पश्चिमी तट पर वर्षा अधिक होती है और पूर्वी तट पर शीत ऋतु में अधिक ।

३––ऊंची धरातल दक्षिण और मध्य भारत यहां वर्षा काम योग्य नहीं होती ॥

४—मरुस्थल जिसमें राजपूताना, बिलोचिस्तान और

सिन्ध शामिल है यहां वर्षा बहुत कम होती है इस कारण से यहां मरुस्थल पड़े हैं ॥

खेतियों को पानी देने के साधन ।

खेतों को पानी देने के भारत वर्ष में तीन साधन हैं १ कुएं २ नहरें ३—तालाब और नीचे लिखे हुए भागों में वर्ते जाते हैं, गंगा और सिन्ध के भीतर सदा रहने वाली नदियां बहुतसी हैं यहां भूमि नर्म और बराबर है इस कारण यहां नहरें साधारणतया खोदी जा सकती हैं और नहरों के द्वारा खेतों को पानी दिया जाता है विशेष कर पंजाब में वर्षा की कमी का घाटा नहरों से पूरा किया गया है लेकिन बंगाल में वर्षा बहुत होती है इसलिये किसी बनावटी पानी देने के साधन की आवश्यकता नहीं परन्तु हिमालय पर्वत के नीचे नर्म पृथ्वी में जल चला जाता है इसलिये यहां कुएं खोदेगये हैं दक्षिण में नदियां थोड़ी हैं वर्षा भी थोड़ी होती है नदियां गर्म ऋतुओं में शुष्क हो जाती हैं भूमि पहाड़ी है इन कारणों से नहरें नहीं निकल सकती कुएं खोदने भी कठिन हैं इसलिये तालाबों या छपड़ों को वर्षा के समय पानी से भर लेते हैं

इस कारण दक्षिण में तालाबों से पानी देते हैं। पूर्वी तट पर नदियों के मुहाने के पास जिस स्थान की भूमि नर्म है नहरों से पानी देते हैं।

भारत वर्ष की नहरें--और जिन देशों को सींचती हैं।

भारत की नहरें दो प्रकार की हैं।

१--सदा चलने वाली नहरें।

२--हाड़ की नहरें (वर्साती)

नदी गंगा से दो नहरें निकाली गई हैं।

१--हरद्वार के पास से निकल कर कानपुर के पास फिर गंगा में मिलादी गई है।

२--अलीगड़ के जिले से निकालकर हमीरपुर के देश से होकर जमुना में मिलादी गई है इन दोनों नहरों से संयुक्तप्रदेश आगरा व अवध को बड़ा लाभ पहुंचा है।

पंजाब की नहरें।

१--नहर पश्चिमीयमन जमुना से निकाली गई है और पंजाब के दक्षिणी पूर्वी देशों में दिल्ली करनाल, रोहतक, हिसार, जींद, इत्यादि जिलों को पानी देती हैं।

२–नहर सरहन्द सतलुज से रोपड़ के स्थान से निकाली गई है और ज़िला लुधियाना, फिरोज़पुर, पटयाला रियासत और नाभा की रियासत को पानी देती है ॥

३–नहर अपर बारीद्वाब नदी रावी से माधोपुरे के पास से निकाली गई है । जो ज़िला गुरदासपुर, अमृतसर, लाहौर के ज़िलों को पानी देती है ॥

४–लोअर बारीद्वाब रावी नदी से बल्लो के स्थान के पास से निकाली है जिससे मिंटगुमरी, मुलतान को लाभ पहुंचा है ॥

५–अपर चिनाब–चिनाब नदी से मराला स्थान से निकाली गई है इस नहर का जल रावी नदी में डाला गया है जहां से यह नहर बारीद्वाब को जाती है ॥

६–लोअर चिनाब–चिनाब नदी से ख़ान की स्थान से निकाली गई है और द्वाबा रचना के अधिक भाग लायलपुर और झंग को पानी देती है इसको चिनाब की बस्ती बोलते हैं यह देश पहिले उजाड़ पड़ा हुआ था पानी के मिलने से सरकार ने भूमि लोगों को देदी है उपज होने लग पड़ी लायलपुर जैसे नगर भी बस गये ।

७–नहर जेहलम–जेहलम नदी से निकाली गई है अब सारी श्रेणी में बनकर तयार होगई है। इनसे जेहलम और शाहपुर के ज़िलों को पानी मिलता है।

उपज।

भारतवर्ष की वर्षा और जल वायु जान लेने पर आप ही पता लग जाता है कि यहां के मनुष्यों का अधिक आसरा खेती बाड़ी है और खेती में अभी तक उन्नति नहीं हुई परन्तु अब हमारी सरकार ने खेती की उन्नति के लिये कानपुर, लायलपुर इत्यादि बड़े २ नगरों में कृषिमहाविद्यालय खोले हैं जिनमें खेती के नये नियम वर्ते जाते हैं भारत में दो प्रकार की वस्तुयें उत्पन्न होती हैं। १–खाने की वस्तुयें। २–वह वस्तुयें जो अन्य काम आती हैं।

खाने पीने की वस्तुओं का वर्णन।

१.–कनक उन देशों में अधिक बीजी जाती है जहां अधिक शर्दी हो फिर गर्मी होजाय, अधिक गर्मी अधिक वर्षा इसके शत्रु हैं इस कारण से पंजाब संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध और मध्य प्रदेश में उत्पन्न होती है।

२–चावल इसके बोने के लिये गर्मी और पानी वाली

वायु की आवश्यकता है इस कारण भारत के कई भागों में बहुत होता है परन्तु बंगाल, ब्रह्मा, मद्रास में अधिक होता है पंजाब में भी नहरों से पानी मिलने पर अच्छा फलता है।

३—गन्ना इसको भी धानों के तुल्य जल वायु चाहिये इसी कारण बंगाल, पंजाब, मद्रास, संयुक्त प्रदेश आगरा अवध व बिहार में बोजा जाता है।

४—जुआर, बाजरा और दालें यह अधिक दामों की वस्तुयें नहीं इसके लिये अधिक वर्षा की आवश्यकता नहीं शुष्क जल में अधिक होता है। इस कारण यह राजपुताना सिन्ध, पंजाब और दक्षिण में उत्पन्न होती है।

५—चाय इसके लिये ऐसी भूमि की आवश्यकता है जिस पर पानी न ठहरे परन्तु इससे होकर वह जाय जलवायु गर्म और आर्द्र हो और वहां पर अधिक वर्षा होती हो इस कारण, कांगड़ा, आसाम, देहरादून, दार्जिलिंग की पहाड़ियों पर बोई जाती है।

६—कहवा और गर्म मसाला भी बोया जाता है इसके लिये मामूली जल वायु चाहिये इस कारण टावनकोर में बोया जाता है।

वह वस्तुयें जो अन्य काम आती हैं ।

१-रुई-इसको गर्म और आर्द्र जल वायु की आवश्यकता है यों तो हर भाग में थोड़ी बहुत पाई जाती है परन्तु गुजरात काठियावार, बरार, बम्बई में होती है ॥

२-सन-चावलों वाली भूमि में अधिक उगता है इस कारण बंगाल आसाम में बहुत बोजा जाता है ॥

३-रेशम-रेशम के कीड़े से उत्पन्न होता है जिसके पालने के लिये शहतूत के वृक्ष चाहिये और शहतूत के लिये बंगाल और आसाम की जल वायु अच्छी है इस कारण वहां का रेशम प्रसिद्ध है ॥

तेल निकालने के बीज हर स्थान पर पाये जाते हैं ॥

४-अफ़ीम पोस्त के डोडों से निकाली जाती है सर्कार की आज्ञा के अनुसार इसको बोया जाता है । इसको आर्द्र जल वायु चाहिये बंगाल के देश मध्य भारत और मालवे में अधिक पाई जाती है ॥

५-तमाकू इसको गर्म जल वायु लाभदायक है परन्तु मद्रास में बहुतायत से पैदा होता है, यहां सिगरेट बनाये जाते हैं ॥

६–नील ऐसी भूमि में बोया जाता है जहां की हवा आर्द्र हो इसलिये बिहार, मद्रास, संयुक्तप्रान्त, अवध में बोया जाता है ॥

जंगल–जंगलों के लिये ऐसे स्थान लाभदायक हैं जहां वर्षा अधिक हो और खेती नहीं बोई जाती हो। विशेष तौर पर पर्वतों से जगल काटकर लकड़ी नादियों के रास्ते मैदानों में लाई जाती है। नदी को उस काम के लिये लाभकारी गिनते हैं जहां ऊप से लकड़ी नीचे को आसके परन्तु दक्षिण की नदी इस काम के लिये अच्छी नहीं भारत वर्ष में निम्नलिखित लकड़ियों के जंगल इस स्थानों पर पाये जाते हैं ॥

१–**सागून**–यह आसाम और पश्चिमी घाट पर पाया जाता है।

२–**देवदार**–हिमालय पर्वत पर अधिक होता है।

३–**आबनूस**–और **साल**–पश्चिमी टि पर।

४–**रबर**–का वृक्ष आसाम में अधिक होता है।

फलदार स्थान ।

फल और मेवे—भारतवर्ष में हर स्थान पर उत्पन्न होते हैं परन्तु पहाड़ी देशों के मेवे और फल मैदानों से अधिक मिठास देते हैं जो इन स्थानों में पाये जाते हैं कश्मीर और कुल्लू के सेव, नाख, और अंगूर, कोयटे के सर्दे, करांची, बम्बई के केले सहारनपुर और मालदा के आम नागपुर की नारंगी, और इलाहाबाद के अमरूद प्रसिद्ध हैं ।

पशु ।

भारतवर्ष में प्रसिद्ध पशु—गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट, घोड़े और हाथी हैं, इनमें से गाय को भारतवासी अपनी देश की रक्षा के लिये बड़ा लाभकारी जानते हैं और इनके लिये बड़ी २ भूमियें खुली छोड़ देते हैं और भेड़ पंजाब और काश्मीर की शुष्क पहाड़ियों पर पाली जाती हैं । ऊंट सिंध और राजपूताने के मरुस्थल में पाया जाता है, हाथी आसाम और ब्रह्मा के जंगलों में, भैंस बंगाल में, घोड़े पेशावर की ओर के प्रसिद्ध हैं ॥

धातु ।

धातु इस देश की बड़ी बहुमूल्य हैं जैसे कोहनूर हीरा

जो अब महाराज जार्ज पंचम के मुकट में लगा हुआ है, गोल कुंडेकी खान से निकला था उस समय उसका मूल्य ७२ लाख रुपया था परन्तु अब भी धातु भारत के पर्वतों के निकट से पाई जाती है वह यह हैं पत्थरका कोयला बंगाल आसाम दारदरा, जो मध्यप्रदेश में है, पंजाब हैदराबाद में पाया जाता है, और नर्वदा की तराई और छोटानागपुर की तराई में पाया जाता है ।

लोहा–मद्रासदेश में सलीम, बंगालदेश में बराखार में पाया जाता है इसको शुद्ध करने के लिये कोयले और चूने के पत्थर की आवश्यकता है तभी सस्ता पड़ सकता है ॥

सोना–मैसूर के दक्षिण में कोलर जिले में पाया जाता है।

तांबा–हिमालय पर्वत और अर्बली पर्वत से निकलता है

शीशा–हिमालय के उत्तर पश्चिमी भाग में से ।

संगमरमर–जयपुर से जाता है ।

जवाहरात–अधिक से अधिक ब्रह्मा, लंका, कश्मीर और दक्षिणी भारत में पाये जाते हैं ।

नमक—पंजाब में खीवे और खिवड़े की खानों से झील सांभर जो राजपुताने में है और खारी पानी से भी नमक निकालते हैं।

विद्या और शिल्पकारी।

जब सारे जगत् पर अन्धकार छाया हुआ था तो भारत वासी सब बातों में ऐसे निपुण थे कि किसी देश के न होंगे नीति विद्या और विद्या की बृद्धि में मान धनाढ्यता, धर्म धर्माचरण और स्मृतिशास्त्र में ज्योतिष, संगीत वैदिक विद्या में बड़े निपुण थे यहां से और देशों में फैला, थवई के काम और चित्रकारी में प्रथम थे, जैसे अब भी गढ़दौलताबाद, आबू आदि पुराने मन्दिर इस बात के साक्षी हैं शिल्प विद्या में भी अध्यापक थे ढाके की मलमल बनारस की कीमखाब गुलबदन बंगाले का नैनसुख सारे जगत् में बड़ी २ कुलें बड़े उत्साह से पहनती थीं यह सब विद्या के न पढ़ने और अनुकरण के कारण जाते रहे अब फिर पहिले की तरह कई एक चीजें बनने लगी हैं।

शिल्पकारी—ऊन का कपड़ा हाथ से बुनना यह काम श्रीनगर अमृतसर और लाहौर में भी होता है कारण यह है कि पंजाब में भेडें अधिक पाली जाती हैं।

रेशम बुनना-बंगाल और आसाम में बुना जाता है।

लकड़ी का काम-कश्मीर, देहली, बनारस और ब्रह्मा में।

धातु का काम-भारतवर्ष के सब नगरों में आवश्यकता के अनुसार जीवन के व्यतीत करने के लिये हर नगर में हर प्रकार की शिल्प विद्या हाथों से की जाती थी किसी अन्य देश से वस्तुओं के लाने का आवश्यकता न थी परन्तु अब धातुओं का काम मशीनों से बनकर अन्य देशों से अधिक आने लगपड़ा है और सस्ता होने के कारण से लोग उस को लेने लग पड़े हैं फिर भी बनारस, मद्रास, मुरादाबाद में बर्तन हाथ से बनते हैं ।।

रुई के कार्यालय-बम्बई प्रान्त और पंजाब में अधिक हैं।

१—जिसके कारण यह हैं रुई बरार में अधिक होती है।

२—जल वायु आर्द्र है जो तार को टूटने नहीं देती है।

३—पासही रानीगंज से कोयला लाया जाता है।

ऊन के कार्यालय-पंजाब में धारीवाल संयुक्तप्रदेश आगरा अवध में कानपुर इन प्रान्तों में भेड़ें अच्छी पलती हैं।

सन के कार्यालय—कलकत्ता और हुगली के तट पर, कारण यह है कि सन अधिक पैदा होता है और कोयला भी निकट पाया जाता है।

चमड़े के कार्यालय—कानपुर, मद्रास, पंजाब।

आटे के कार्यालय—पंजाब संयुक्तप्रदेश आगरा अवध सिंध कारण कि गेहूं अधिक होता है।

लकड़ी चावल की कलें—ब्रह्मा में अधिक पाई जाती हैं।

भारतवर्ष का व्यापार।

भारतवर्ष का व्यापार चिरकाल से प्रदेशियों के साथ है और कई देशों से स्थलमार्ग से कई देशों से जल मार्ग से होता है।

वह वस्तुयें जो भारतवर्ष से बाहर जाती हैं।

भारतवर्ष में धातें कम हैं लोग खेती बाड़ी करते हैं इस लिये जो वस्तुयें बाहर भेजी जाती हैं वह जंगलों व खेतों से पैदा होती हैं जैसे गेहूं, चावल, तेल, बीज, रुई, सन, चाय, अफीम, नील, कहवा।

बाहर से भारतवर्ष में आने वाली वस्तुयें।

भारतवर्ष में कार्यालय नहीं इस लिये अधिक वही वस्तुयें आती हैं जो कार्यालयों से बनती हैं जैसे रुई का

कपड़ा, हर प्रकार की कलें लोहे की छोटी २ वस्तु शराब दियासलाई, घड़ियां, गार्डर चांदी इत्यादि ।

व्यापार करने के मार्ग ।

१–तटका व्यापार–भारत के तट पर बड़े २ बन्दर कलकत्ता रंगून मद्रास और कराची हैं जिनके द्वारा सूती और ऊनी कपड़े शीशे और धातु के बर्तन मट्टी का तेल शराब और कलें इत्यादि अन्य देशों से भारत में आती हैं। और इन बन्दरों से रेल के द्वारा सारे भारत में पहुंचाई जाती हैं और इन्हीं बन्दरों के द्वारा भारत से वह वस्तुयें जो यहां अधिक उत्पन्न होती हैं सहलता से बाहर भेजी जाती हैं।

सीमा से परे का व्यापार ।

सीमा पार रेल के न होने से व्यापार ने उन्नति नहीं की परन्तु आफगानिस्तान और फ़ारस के साथ व्यापार होता है दार्जिलिङ्ग वा कश्मीर की ओर से तिब्बत के साथ और दर्रा ख़ैबर के द्वारा अफगानिस्तान से और दर्रा बूलान व कोयटा के रास्ते फ़ारस से।

भारत में रेलों का वर्णन ।

भारत में रेल निम्न लिखित मतलबों के लिये बनाई

१-रेल ऐसे देशों में बनाई गई है जहां मनुष्य संख्या अधिक, उपजाऊ भूमि हो कारण यह है कि वहां आने जाने का अधिक आवश्यकता है जैसे एक लाइन कलकत्ते से बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, देहली, लाहौर होती हुई पेशावर पहुंचती है, परन्तु राजपुताने मध्यप्रदेश में रेलें कम बनाई गई हैं।

२-बन्दरों को व्यापारिक नगरों से रेल द्वारा मिला दिया गया है और भारत के बड़े २ नगर भी एक दूसरे से जैसे बम्बई को आगरे से बम्बई को कलकत्ते से बम्बई को दिल्ली से।

३-ऐसे स्थानों पर रेल बनाई गई है जहां की भूमि चौरस और रेल बनाने में कम खर्च होता है।

४—देश की रक्षा के लिये अर्थात् समय पर सेना और रसद शीघ्र पहुंच जाय।

५-उपजाऊ भूमि का थोड़े उपजाऊ भूमि के साथ रेलों द्वारा मिलाया गया है कि अकाल पड़ने पर घास वा दाना पहुंचाया जाय।

६-अगले समय में दूर की यात्रा करने के लिये बड़े

कष्ट उठाना पड़ता था बहुत समय व धन व्यय होता था अब आराम से शीघ्र पहुंच जाते हैं ।

मुख्य रेलें यह हैं—७½ लाख मील के लग भग बनी है और लाभ प्रति सप्ताह ५½ लाख रुपये का है और जो सड़कें इस देश में बनी हुई हैं व्याख्या इनकी यह है ।

१—ईस्ट इंडिया रेलवे—(पूर्वी हिन्दुस्तान की रेलें) यह सारी लम्बाई में १५३ मील है बड़ी लाइन कलकत्ते से देहली तक है इस पर १३१ स्टेशन हैं परन्तु यह प्रसिद्ध हैं ॥

हौवड़ा वर्दवान, रानीगंज, जमालपुर, लक्खीसरा, दानापुर, मुगलसराय, बनारस, इलाहाबाद, आगरा, इटावा, अलीगढ़, गाजिआबाद देहली, और इसकी एक शाखा इलाहाबाद से जबलपुर को जाती है नानकपुर, सन्ता, जबलपुर, उस पर स्टेशन हैं ।

२—नार्थवैस्टर्न रेलवे—देहली से शेरशाह तक ५६५ मील लम्बाई है सब स्टेशन उस पर ६९ हैं और यह प्रसिद्ध हैं देहली, मेरठ, सहारनपुर, अम्बाला, लुधियाना, जालंधर, अमृतसर, लाहौर मिंटगुमरी, मुलतान शेरशाह, और एक लाइन इस की अब मुलतान से बहावलपुर और सिंध को गई है।

३—पंजाब नारदर्नस्टेट रेलवे। उत्तरी सरकारी रेल

लाहौर से पेशावर तक गई है, जो लम्बाई में २१० मील है, प्रसिद्ध स्टेशन इस सड़क पर यह हैं-लाहौर, गुजरांवाला, वजीराबाद गुजरात, जेहलम, गुज्जरखां, रावलपिंडी, अटक, पेशावर इस की एक शाखा लालामूसा से भेरे को जाती है और एक वजीराबाद से स्यालकोट को गई है ॥

४-सिन्ध रेलवे। करांची से कोइटा तक ११० मील है सब स्टेशन इस सड़क पर ६९ हैं और प्रसिद्ध कोटरी, सक्खर हैं, और कोटरी से शेरशाह तक इस कम्पनी का जहाज़ चलता है जिसका नाम (स्टीम फलाटला) है यह शाख देहली रेलवे से मिल गई है ॥

५-ईसटरन बंगाल रेलवे (पूर्वी बंगाल रेलवे) १९७ मील लम्बी है कलकत्ता, किशतिपा, गलौडों इस पर प्रसिद्ध स्टेशन हैं ॥

६-अवध रुहेलखण्ड रेलवे-लम्बाई ४९६ मील है बनारस से मुरादाबाद तक यह प्रसिद्ध स्टेशन हैं। जौनपुर, वजीराबाद, फैजाबाद, नवाबगंज, लखनऊ, हरदोई, शाहजहानपुर, बलारी, बरेली, चन्दौसी, मुरादाबाद इसकी तीन शाखा हैं एक लखनऊ से कानपुर तक दूसरी नवाबगंज से बहराम घाट तक तीसरी चन्दौसी से अलीगढ़ को ॥

७--राजपुताना स्टेट रेलवे (सरकारी रेल) देहली से

नसीराबाद तक जाती है २८८ मील लम्बी है सब ३२ स्टेशन हैं देहली, गुड़गांवा, रीवाड़ी, अलवर, जैपुर, नसीराबाद प्रसिद्ध हैं।

८—बम्बई बड़ौदा मध्य रेलवे—बम्बइ से साभरमती तक २०३ मील लम्बी है बम्बई, सूरत, भड़ाइच, साबरमती, इस पर प्रसिद्ध स्टेशन हैं ॥

९—ग्रेट इंडियन पैननशुला (प्रायद्वीप हिन्द की बड़ी रेल) यह सड़क १२७४ मील लम्बी है इस की दो शाखा हैं एक उत्तर पूर्वी—जो बम्बई से रीकर तक जाती है इस पर प्रसिद्ध स्टेशन यह हैं बम्बई, कल्याण, नन्दगांव, चालीसगांव, नागपुर, भूसावल, सुहागपुर, घांडवा, जबलपुर, रीकर, दूसरी शाखा दक्षिण पूर्वी। बम्बई से कृष्णा को जाती है बम्बई, पूना, शोलापुर कृष्णा इस पर प्रसिद्ध स्टेशन हैं बम्बई से कलकत्ते तक १२७४ मील का अन्तर है ६५$\frac{1}{4}$ घण्टे का पथ है।

१०—नजाम स्टेट रेलवे—वेदी से हैदराबाद तक है इस पर विजापुर हैदराबाद प्रसिद्ध स्टेशन हैं ॥

११—मद्रास रेलवे ८३५ मील लम्बाई में है दक्षिण पश्चिमी लाइन पर प्रसिद्ध स्टेशन यह हैं—मद्रास, आरगोटम जलारपट, सलीम, ऐरोड़, कुईम्बातुर बालघाट नैपुर पश्चिमोत्तरी लाइन पर आरगोटम, कपाड़ी, गोटी है ॥

१२—सौथ इंडियन रेलवे (दक्षिणी हिन्दुस्तानी बड़ी रेल) करोड़ से नागा पटम तक जाती है सब स्टेशन इस पर ८९ हैं जिन में से करोड़ त्रिचनापली, मडोरा, टनादिल्ली, तंजौर, नागापट्टम प्रसिद्ध हैं ॥

१३—नलहटी स्टेट रेलवे—९८ मील लम्बी है ॥

१४—हुलकर स्टेट रेलवे ५००मील लम्बी है मथुरा हाथरस आदि तीन सड़क छोटी २ हैं और भी नई २ रेलें बन रहीं हैं॥

नदियां और नहरें व्यापार में सहायता देने वाली।

भारत की नदियें व्यापार के लिए प्रसिद्ध हैं। इन में से गंगा सिन्ध ब्रह्मपुत्र में किश्तियों द्वारा व्यापार होता है और इन में से कई नहर व्यापार के लिये निकाली गई हैं जैसे गंगा की नहरें जो हरद्वार से कानपुर तक है।

२—नहर बुकिंघम जो मद्रास नदी कृष्णा तक पहुंचती है और संयुक्त प्रदेश आगरा अवध बंगाल में भी ऐसी नहरें निकाली गई हैं ॥

सड़कें।

भारत के बड़े २ नगरों में पक्का मार्ग है और कच्चे मार्ग भी बहुत हैं इन में छकड़ों के द्वारा व्यापार होता है सब से बड़ा मार्ग पेशावर से कलकत्ते तक १५०० मील लम्बा है ॥

भारत के निवासियों का वर्णन।

भारत में भिन्न २ जातियों के लोग बसते हैं जोकि रूप रंग बाणी मत स्वभाव रहन सहन में एक दूसरे से भिन्न हैं इस कारण से कहसकते हैं कि भारत जातियों का अजायब घर है (विचित्रालय) साधारणतया भारत में चार सन्तानें रहती हैं॥

१—असली निवासी २—द्राविडियन तीसरे आर्य चौथे तिब्बती ब्रह्मी हैं और इनके बड़े यह मत हैं हिन्दू मत प्राचीन मत है अनुमान से तीन चौथाई निवासी हिन्दू हैं दूसरे॥

मुसलमान—पांचवें भाग के लगभग हैं और सारे भारत में थोड़े पाये जाते हैं परन्तु कश्मीर संयुक्त प्रदेश पंजाब बलोचिस्तान सिन्ध और बंगाल में बाकी इसाई पार्सी हैं और अपने २ धर्म का पालन करते हैं॥

भाषा—भिन्न २ देशों में भिन्न २ भाषायें बोली जाती हैं जैसे पंजाब में पंजाबी यू० पी० में उर्दू हिन्दी बंगाले में बंगाली सिन्ध में सिन्धी बम्बई मदरास में मरहट्टी, गुजराती तिलगू तामल ब्रह्मा में ब्रह्मी परन्तु यह सब संस्कृत भाषा से निकलती हैं और अब भी सारे भारतवर्ष की भाषा एक होसकती है क्योंकि इनके प्रचलित वर्णों में थोड़ा भेद है।

सारे भारत वर्ष की मनुष्य संख्या ३२ करोड़ है और मनुष्य संख्या के अनुसार संसार में दूसरे नम्बर में है ॥

विद्या—अंग्रेजी विद्या की चर्चा दिनबदिन बढ़ती जाती है परन्तु अपनी मातृ भाषा का भी प्रचार हो रहा है पाठशालायें वा महाविद्यालय प्रचलित हैं शिल्पविद्या और कृषि के महाविद्यालय भी बन रहे हैं आयुर्वैदिक वा डाक्टरी के महाविद्यालयों से मनुष्यों के रोग का नाश किया जाता है मनुष्यों में तो विद्या १०० में से १० को है परन्तु स्त्रियों में बहुत कम प्रचार है अब सरकार व धार्मिक सभायें इस शिक्षा के प्रचार में बहुत कार्य कर रहे हैं ॥

मनुष्य संख्या के नियम ।

१—जल और वायु गन्दे जल वायु में लोग नहीं रह सकते इसी कारण आसाम में मनुष्य संख्या कम है । क्योंकि वहां दलदल बहुत है हिमालय के ऊंचे स्थानों और मरु स्थल में आबादी कम है वहां की जल वायु शीतोष्ण होती है ॥

२—**भोजन**—मनुष्यों को भोजन की अधिक आवश्यकता है जो जंगलों में नहीं मिलता परन्तु वहां पर मनुष्य भी नहीं रहते जो रहते हैं वह बड़े कष्ट से पेट पालन करते हैं

या मछलियों पक्षियों को मारकर अपना निर्वाह करते हैं जिन देशों में खेती अधिक होती है वर्षा काम योग्य होती है यहां घने मनुष्य बसते हैं जैसे गंगा का मैदान ।

३–धातुओं की उत्पत्ति कोयला लोहा कार्यालयों की जान है एक कार्यालय से कई मनुष्य पलते हैं इसी कारण धातुओं की खान के पास कार्यालय बनाये जाते हैं मनुष्य घने बस जाते हैं । या स्वर्ण और इसी जैसी धातुओं की खानों के पास भी लोग अधिक बस जाते हैं ॥

४–आने जाने वाले मार्ग–पर्वतों में आने जाने के लिये कठिनाई होती है परन्तु मनुष्य भी थोड़े रहते हैं वह व्यापारिक पक्के मार्ग रेल के स्टेशनों और नदियों के पास लोग बहुत रहते हैं और समुंद्र के तट पर भी बड़े सुन्दर नगर बनाये जाते हैं ॥

भारत के जल वायु का भारतवासियों पर प्रभाव ।

१–भारत की जल वायु गर्म है इस कारण थोड़ा सा कष्ट उठाने से बहुत सा अनाज पैदा हो जाता है और पेट पालने के लिये कष्ट उठाना नहीं पड़ता ।

२–जल वायु खेती के लिये अच्छी है वर्षा हर ऋतु पर होती है इस कारण लोग शान्ती से भारत में काम करते हैं और इसके लिये कलों की भी आवश्यकता नहीं ॥

३-वर्षा परमात्मा की ओर से अगर समय पर हो जाय तो खैर नहीं तो अकाल पड़ जाता है अब दूसरे देशों में अन्न जाने के कारण अन्न का भाव महंगा ही रहता है। और इस से लोगों की तबीयत सहन शीलता से कष्ट को सहार लेती है और इस को अपने कर्मों का फल गिनते हैं॥

५--गर्म ऋतु में इतनी गर्मी हो जाती है कि दिन का बहुत सा भाग ठंडे स्थानों में व्यतीत करना पड़ता है काम करने को जी नहीं चाहता इससे यहां के निवासी सुस्त निर्बल हो जाते हैं॥

राज्य।

भारत का राज्य आजकल सम्राट जार्जपंचम के हाथ में है जो आजकल विलायत में रहते हैं भारत के राज्य का प्रबन्ध एक मन्त्री के आधीन है जिसको भारत का मन्त्री बोलते हैं इसको सलाह देने के लिए एक प्रतिनिधि स्थापित है जिसमें कम से कम १० अधिक से अधिक १४ मैम्बर होते हैं, जो १० वर्ष से अधिक भारत वर्ष में रह चुके हों जिनको भारत से गए हुए ५ वर्ष से अधिक न हों यह प्रतिनिधि सप्ताह में १ बार बैठकर सलाह करते हैं और इस बात का निर्णय करते हैं कि भारत का मामला अर्थात् भूमि का टैक्स किस प्रकार व्यय किया जाय। भारत के राज्य के

लिए महाराजाधिराज की ओर से एक नायब भारत में भेजा जाता है जिसे वाइसराय बोलते हैं, जो पांच या थोड़ा अधिक काल में बदल जाता है इस के आधीन दो प्रतिनिधियें होती हैं एक को वाइसराय की प्रतिनिधि बोलते हैं दूसरी को नियम बनाने वाली वाइसराय के अधीन देश का प्रबन्ध करने के लिए भारत को कई प्रान्तों में बांटा हुआ है और हरएक प्रान्त का स्वामी अलग २ होता है। सरकार अंग्रेजी की प्रबन्ध के अनुसार मद्रास बम्बई सब से प्राचीन प्रान्त हैं जिसको प्रेसिडेन्सी कहते हैं जो गवरनरों के अधीन हैं और वाइसराय की तरह की पांच साल रहते हैं सारा भारतवर्ष सरकार अंग्रेजी के अधीन है सिवाय थोड़े छोटे स्थानों के जो फ्रांसीस व पुर्तगीजों के आधीन हैं उनमें वह प्रबन्ध करते हैं परन्तु उनके साथ सरकार का बहुतसा सम्बन्ध है भारत में देशी राजा नवाब भी राज्य करते हैं जो सरकार अंग्रेजी को कर देते हैं परन्तु नैपाल भूटान की रियासतें स्वतन्त्र हैं परन्तु सरकार अंगरेजी के साथ मित्रभाव रखते हैं॥

भारत के प्रबन्ध के हिस्से।

१—पहिला वह भाग जो सरकार अंगरेजी के आधीन

है जिसको वृटिश इंडिया बोलते हैं। चित्र में लाल रंग से बताया गया है ॥

२–वह भाग जो देशी राजाओं नवाबों के आधीन है जो सरकार को कर देते हैं नकशे में उनका रंग पीला है ॥

३–नैपाल भूटान जो स्वतन्त्र हैं ॥

४–अन्य देशीय जो फ्रांस व पुर्तगाल वालों के आधीन है ।

वृटिश भारत ।

भारत का वह भाग जो विशेष सरकार अंग्रेजी के आधीन है प्रबन्ध के अनुसार निम्नलिखित भागों में बांटा हुआ है—

१–उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश । २ पंजाब, ३ देहली, ४ संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध, ५ बंगाल, ६ आसाम, ७ बिहार उड़ीसा छोटा नागपुर, ८ ब्रह्मा, ९ मध्यप्रदेश व बरार, १० मद्रास, ११ बम्बई, १२ वृटिश बिलोचिस्तान, १३ कोरग, १४ द्वीप अंडमान व निकोबार ॥

बंगाल, बम्बई, और मद्रास, में गवर्नर साहिब बहादुर और पंजाब, ब्रह्मा संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध, बिहार, उड़ीसा छोटा नागपुर में लफ्टेंट गवर्नर और आसाम मध्य-प्रदेश बरार उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश देहली द्वीप

अंडमान व निकोबार और कोरग में चीफ कमिश्नर साहब भारत के वाइसराय के आधीन राज्य करते हैं ॥

उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश का वर्णन ।

नाम पड़ने का कारण—यह प्रान्त पंजाब के उत्तरी और पश्चिमी सीमा पर है और प्रबन्ध के लिए १६०१ ई० से पंजाब से पृथक किया गया है इस लिए इसका नाम यह पड़ा ॥

सीमा—उत्तर में हिन्दू कुश पूर्व में पंजाब पश्चिम में अफगानिस्तान दक्षिण में विलोचिस्तान ।

क्षेत्रफल और मनुष्य संख्या—पंजाब का दशवां भाग है और मनुष्य संख्या २२ लाख है अर्थात् बारहवां हिस्सा जिनमें पठान अधिक हैं इनकी भाषा पश्तो है और खेती का काम करते हैं ॥

जल वायु और उपज ।

जल वायु पंजाब की सी है केवल पहाड़ी स्थानों में अधिक शीत है । इसी कारण कई प्रकार के अनाज और देवदार चीड़ के वृक्ष और फल उत्पन्न होते हैं ॥

व्यापार ।

नार्थवेष्टर्न रेलवे के द्वारा होता है जो पेशावर तक है ॥

प्रसिद्ध नगर ।

पेशावर राजधानी है यहां कामश्नर साहिब रहते हैं यहां की लुंगियां पंखे प्रसिद्ध हैं ॥

बन्नू—छावनी है ॥

एबटाबाद—आरोग्यता का देने वाला स्थान है ॥

पंजाब ।

नाम धरने के कारण—अर्थात् पांच नदियों का देश सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब, जेहलम, इसम बहती हैं इस कारण पंजाब नाम पड़ा ॥

सीमा—उत्तर में काश्मीर रियासत पूर्व में संयुक्त प्रदेश आगरा अवध दक्षिण म राजपूताना, पश्चिम में उत्तरी पश्चिमी सीमान्त प्रदेश ॥

क्षेत्रफल व मनुष्य संख्या--१$\frac{3}{2}$ लाख वर्ग मील मनुष्य संख्या २$\frac{3}{2}$ करोड़ आधे मुसलमान, तिहाई हिन्दू पन्द्रहवां हिस्सा सिक्ख और शेष अन्य जाति के इन की भाषा पंजाबी है ॥

जल वायु और उपज ।

पर्वतों में गर्मी कम मैदानों में गर्मियों में अधिक गर्मी और शर्दियों में अधिक शर्दी इस कारण यहां अधिक वस्तुयें उत्पन्न होती हैं जिनमें से अनाज व रूई दूसरे देशों को भेजी जाती हैं नदियों से नहरें निकालने से देश को बड़ा लाभ पहुंचा है इन नदियों के भीतर की भूमि को द्वावे कहते हैं जिनके नाम यह हैं—१ विस्त जालन्धर, २ द्वावा वारी, ३ द्वावा रचना, ४ द्वावा चज या चम्बा, ५ द्वावा सिन्ध सागर ॥

व्यापार ।

यहां से गेहूं, सरसों, रूई, चमड़ा, चावल, दूसरे देशों को जाते हैं, कपड़ा धातु की वस्तुयें फल बाहर से आते हैं ॥

राज्य ।

प्रबन्ध के अनुसार इसमें पांच कमिश्नरियां हैं जिनके नाम यह हैं—अम्बाला, जालन्धर, लाहौर, रावलपिंडी और मुलतान जो कमिश्नर साहिब के आधीन हैं और इनके ऊपर लफ्टेनट गवर्नर बड़े स्वामी हैं ॥

देशी रियासतें ।

इस प्रान्त में बहुतसी देशी रियासतें जिनमें प्रसिद्ध यह

हैं—काश्मीर, बहावलपुर, पटियाला, नाभा, जींद इत्यादि ॥

बड़ी कमिश्नरी देहली ।

देहली—दिसम्बर १९११ को भारत के सम्राट जार्ज पंचम ने यहां आनकर अपने मुखार्विन्द से कलकत्ते को हटाकर भारत की राजधानी बनाया । यह जमुना के तट पर स्थापित है भारत के प्राचीन राजाओं की यह राजधानी थी। इसके प्रसिद्धता के यह कारण हैं ॥

१.—यह प्राचीन समय की राजधानी है और इतिहास का बड़ा नगर है ॥

२—यह तमाम संसार में अपनी सुन्दर इमारतों जैसे शाहजहांन का महल जामेमसजिद कुतुब साहब की लाठ इत्यादि ॥

३—यह दरबारों के लिए प्रसिद्ध हैं जो १८७७ ई० १९०३ वा १९११ ई० में हुए थे ॥

४—यह व्यापार का केन्द्र है और उत्तरी भारत की रेलवे का (बड़ा स्थान) जंकशन है ॥

५—यह नदी सिन्ध से गंगा के सरसबज़ रास्ते में है ॥

६—यहां के निवासी बड़े धनी हैं ॥

अब कलकत्ते से बढ़कर शोभा को पारहा है कई प्रकार के कार्यालय बन रहे हैं ॥

प्रसिद्ध नगर ।

अमृतसर—रावी, व्यास, के भीतर स्थापित है सिक्खों का पवित्र स्थान है यह व्यापार का घर है दर्बार-साहब देखने योग्य इमारत है सिक्खों का खालसा कालेज यहीं पर है । ऊन और रेशम का काम भी होता है ॥

लाहौर—नदी रावी पर स्थापित है पंजाब की राजधानी और यूनीवर्सिटी का स्थान है कई प्रकार के महा विद्यालय खुले हुए हैं परन्तु श्रीमद्दयानन्द ऐंगलो वैदिक कालेज जो श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के नाम पर खोला गया है सारे पंजाब की जान है । न्यायालय जहांगीर का मुकबरा, शालामार देखने के योग्य योग्य है ।

रावलपिंडी—बड़ी छावनी है वहां से लोग काश्मीर मरी जाते हैं इस कारण इसकी शोभा बढ़ रही है ॥

मुलतान—नदी चिनाव के तट पर क्रांची की ओर जाने वाला माल यहां इकट्ठा होता है और इरान कन्धार को भी यहां से माल ले जाते हैं ॥

फिरोज़पुर—छावनी है ॥

लुधियाना—में कपड़े का व्योपार होता है ॥

स्यालकोट—खेलों का सामान, और टरंक और कागजों के लिये प्रसिद्ध है ॥

वजीराबाद—रेलका जंकशन है इसलिये बड़ी उन्नति में है।

बठिन्डा—रेलवे का जंकशन है ॥

शिमला—गर्मियों में पंजाब के अंग्रेज लोग वहां हवा बदलने जाते हैं ॥

पंजाब की छावनियां—लाहौर कन्टोनमैन्ट, अम्बाला, लुधियाना, जालन्धर, स्यालकोट, रावलपिण्डी, फिरोजपुर ॥

आरोग्यता के स्थान—शिमला, डलहौजी, धर्मसाला, मरी ॥

देसी रियास्तें।

(१) ६ सिक्ख रियास्तों में से पटियाला, नाभा, जीन्द, बड़ी हैं। बहावलपुर मुसलमानों की सब से बड़ी रियास्त है। शिमले की पहाड़ी रियास्तें जिन में से चम्बा प्रसिद्ध है ॥

संयुक्तप्रदेश आगरा व अवध।

सीमा—उत्तर में नैपाल व हिमालय पर्वत पूर्व

में उड़ीसा और छोटा नागपुर, दक्षिण में मध्य प्रदेश पश्चिम में पंजाब व राजपूताना ॥

क्षेत्रफल, मनुष्य संख्या--यह प्रान्त पंजाब से छोटा है मनुष्य संख्या अधिक है हिन्दू अधिक बसते हैं, आर्य्य भाषा बोलते हैं परन्तु खेती का काम करते हैं कई प्रकार की शिल्प विद्यायें जानते हैं जैसे वर्तन बनाना रूई चमड़े का काम व चाय के कार्य्यालय हैं ॥

जल वायु और उपज ।

पर्वतों के पास की शीत और मैदान की जल वायु गर्म परन्तु पंजाब की सी नहीं, गंगा और जमुना नदी के कारण इस देश की भूमि उपजाऊ है यहां भी गेंहू अधिक होता है ।

देशी रियास्तें ।

१--गढ़वाल यह हिन्दू राजा के आधीन है इसमें केदारनाथ, बद्रीनाथ के प्रसिद्ध मन्दिर हैं ॥

रामपुर--नवाब के आधीन है, ऊनी चादरें प्रसिद्ध हैं।

प्रसिद्ध नगर ।

इलाहाबाद--इसको प्रयाग भी कहते हैं यह गंगा जमुना के संगम पर स्थापित है ॥

बनारस--प्राचीन पवित्र स्थान है यहां पर हिन्दू यूनीवर्सिटी बन गई है कई प्रकार के शिल्पकारी हैं ॥

कानपुर—गंगा नदी के किनारे पर है चमड़े ऊन रूई के कारखाने के लिये प्रसिद्ध है

आगरा—प्राचीन मुगल बादशाहों की राजधानी और ताज महल की समाध संसार में सब से अच्छी बनी है ॥

मेरठ--अशोका समय का पुराना नगर है छावनी है।

लखनऊ—पुरानी राजधानी है कई इमारतें देखने के योग्य हैं, कई प्रकार की शिल्पकारी होती है छावनी है।

हरिद्वार--हिन्दुओं का पवित्र स्थान है । आर्य गुरुकुल इसके पास देखने योग्य स्थान है ॥

मुरादाबाद--यहां के कलई के बर्तन प्रसिद्ध हैं ॥

मथुरा--हिन्दुओं का पवित्र स्थान है ॥

सहारनपुर--जंकशन रेलवे और नहरों का बड़ा कार्यालय है।

रुड़की--यहां पर इंजिनरिंग कालेज है ॥

अलीगढ़--मुसलमानों का बड़ा भारी कालिज है ॥

अयोध्या--हिन्दुओं की पुरानी राजधानी है ॥

आरोग्यता वर्धक स्थान ।

देहरादून, नैनीताल ॥

बंगाल प्रान्त ।

सीमा—उत्तर में भूटान व तिब्बत पूर्व म आसाम व ब्रह्मा दक्षिण में बंगाले की खाड़ी पश्चिम में बिहार उड़ीसा व छोटा नागपुर ॥

क्षेत्रफल व मनुष्य संख्या—७० हजार वर्ग मील मनुष्य संख्या ४¼ करोड़ है बंगाली और आर्य भाषा बोली जाती है ॥

धरातल, जल वायु और उपज ।

इसमें पर्वत और नदियां अधिक हैं जिनसे बंगाल की भूमि बनती है ॥

१—गंगा और महा नदी का डेल्टा २—गंगा का मैदान ३—छोटे नागपुर की पहाड़ियां यहां की जल वायु उष्ण और आर्द्र है । वर्षा अधिक होती है जितनी किसी और भाग में नहीं होती इसी कारण यहां पर सन, चावल, कुनैन, गन्ना, नील, उत्पन्न होते हैं ॥

व्यापार ।

समुद्र के समीप होने से पूर्वी देशों से बहुत सा माल आता है और बहुत सा कलकत्ता से बाहर को भेजा जाता है ॥

देशी रियासतें ।

शिकम और कूच बिहार ।

प्रसिद्ध नगर।

कलकत्ता—पहिले भारत की राजधानी था अब हट जाने से इसकी बड़ी हानि हुई है यह बड़ा व्यापारिक नगर है और बन्दर भी है बम्बई से दूसरी श्रेणी पर है यहां पर देश की रेल व स्टेशन व बन्दरगाहें इकठ्ठे हैं। यहां यूनीवर्सिटी भी है यहां पर पुल देखने योग्य हैं देशी कागज के कारखाने हैं॥

बर्द्दान—यह बड़ा प्रसिद्ध नगर है चाकू कैंची बनती हैं।

मुर्शिदाबाद—प्रसिद्ध नगर है रेशमी कपड़ों का व्यापार होता है॥

नदिया—यहां पर प्राचीन समय संस्कृत की बड़ी यूनीवर्सिटी थी॥

दार्जिलिंग—आरोग्यता वर्द्धक स्थान है॥

बारकपुर—छावनी है लोहे का कारखाना है॥

ढाका—प्राचीन समय में बंगाला की राजधानी थी यहां की मलमल प्रसिद्ध है॥

आसाम।

सीमा—उत्तर में भूटान व तिब्बत पूर्व में ब्रह्मा देश दक्षिण में बंगाल की खाड़ी पश्चिम में बंगाल प्रान्त॥

क्षेत्रफल और मनुष्य संख्या—इसका क्षेत्रफल

५ हजार वर्ग मील है मनुष्य संख्या ५० लाख है निवासी हिन्दू हैं जो आसामी बंगाली भाषा बोलते हैं ॥

धरातल, जल, वायु, उपज ।

इस प्रांत में पर्वत व नदियां अधिक हैं आधक जल पड़ने के कारण जल वायु बंगाल की तरह है भूमि उपजाऊ हरी भरी है, यहां से चाय, खांड, लकड़ी, दूसरे देशों को भेजी जाती हैं ॥

देशी रियासतें ।

मनीपुर, टपड़ा ॥

प्रसिद्ध नगर ।

चरापूंजी —में सब से अधिक वर्षा होती है ॥

गोहटी—व्यापारिक मंडी है ॥

डवरूगढ़—में मिट्टी के तेल का व्यापार होता है ॥

सलहट—चूने नारंगी के लिये प्रसिद्ध है ॥

शिलांग—आरोग्यता देने वाला स्थान है ॥

बिहार उड़ीसा व छोटा नागपुर ।

यह प्रान्त पहिले बंगाल के साथ था परन्तु अब पृथक किया गया है ॥

सीमा—उत्तर में नैपाल पूर्व में बंगाल दक्षिण में बंगाला की खाड़ी मदरास हाता, पश्चिम में संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध ॥

क्षेत्रफल व मनुष्य संख्या—एक लाख १३ हजार वर्ग मील और मनुष्य संख्या ३½ करोड़ के लगभग है अधिक हिन्दू रहते हैं भाषा हिन्दी और उड़ीसे की उड़िया है ॥

धरातल जल वायु और उपज ।

इस प्रांत में नदियां अधिक मिलती हैं यह नदियां पर्वतों से अपने साथ मिट्टी लाती हैं और भूमि को उपजाऊ बनाती हैं उत्तर की ओर पर्वत हैं उत्तरी भाग की जल वायु मामूली है समुद्र के पास होने से दक्षिणी भाग अधिक गर्म नहीं चावल, गेहूं, सन पैदा होती है ॥

रानीगंज से कोयला बाहर जाता है ॥

प्रसिद्ध नगर ।

पटना—राजधानी है यहां पर लैफटिनेंट गवर्नर रहता है॥

मंगेर—बड़ा सुन्दर नगर है इसमें लोहे की चीजें अधिक बनती हैं ।

गया—हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है ॥

जगन्नाथ—यहां भी हिन्दुओं का बड़ा भारी मंदिर है॥

हजारीबाग़—आरोग्यता देने वाला स्थान है ॥

ब्रह्मा ।

सीमा—उत्तर में आसाम और चीन—पूर्व में चीन और स्याम दक्षिण में बंगाले की खाड़ी पश्चिम में बंगाल वा आसाम ॥

क्षेत्रफल और मनुष्य संख्या--क्षेत्रफल पंजाब से दुगना है और आबादी पंजाब से आधी है। यहां के लोग बौद्ध धर्म के मानने वाले हैं इन की भाषा ब्रह्मी है।

धरातल वा जल, वायु और उपज।

इस प्रान्त में उत्तर से दक्षिण को पर्वतों की श्रेणियां फैली हुई हैं। जिनको पेगूयूमा, और तनासरमयूमा कहते हैं इन से नदी ऐरावती, और सालून निकलती हैं।

ऐरावती--में जहाज़ चल सकते हैं ब्रह्मा के लोअर वा अपर भाग की जल वायु भिन्न २ है अपर ब्रह्मा लोअर ब्रह्मा से अधिक खुश्क है इस में चावल तेल निकालने के बीज तमाकू बोया जाता है लकड़ियां भी यहां पाई जाती हैं मट्टी का तेल यहां से दूसरे देशों को जाता है।

राज्य--एक लैफटिनेंटगवर्नर के आधीन है।

प्रसिद्ध नगर।

रंगून राजधानी--है और प्रसिद्ध बन्दर है।

मांडले--पहिले यह राजधानी थी अब छावनी है।

अमरपुर और आवा--पुराने नगर हैं।

मौलमीन और मरगोई--बन्दर हैं यहां से लकड़ी दूसरे देशों को जाती है।

बसीन--लकड़ी के व्यापार की मंडी है।

अकयाब--बन्दर है चावल का व्यापार होता है।

अहाता मदरास।

भारत में सब से पहिले अंग्रेजों के हाथ में आया था।

सीमा--उत्तर में उड़ीसा और छोटा नागपुर और हैदराबाद पूर्ब में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण में हिन्दमहासागर पश्चिम में अरबसागर।

क्षेत्रफल और मनुष्य संख्या--क्षेत्रफल बंगाल के बराबर है मनुष्य संख्या ४ करोड़ २४ लाख है इस में हिन्दू मुसलमान ईसाई बसते हैं जिनकी भाषा तामल और तलगू है लोग खेती करते हैं कई कारखाने हैं।

धरातल, जल, वायु और उपज

इसकी भूमि में कृष्णा कावेरी उत्तरी पनार दक्षिणी पनार बसते हैं फिर भी खेतों को पानी देने के लिये नहरें बनाई गई हैं जल वायु किनारे के भागों की गर्म और ऊंचे स्थानों की शीत है जब दक्षिणी, पश्चिमी मानसून चलती है तो वर्षा अधिक होती है गर्म मसाला, कुनैन, तमाकू, रूई, नील, चावल, पाया जाता है नारियल के बृक्ष होते हैं॥

व्यापार--रूई, चावल, कहवा, चमड़ा, तेल निकालने

के बीज, चमड़ा, बाहर जाता है बाहर से शिल्पकारी की वस्तुयें व धातें आती हैं।

राज्य--एक गवरनर के आधीन है।

देशी रियासतें।

पांच हैं जिन में से ट्रावनकोर और कोचीन प्रसिद्ध हैं।

मदरास--राजधानी है अच्छी बन्दरगाह नहीं कारण यह है कि तट पर समुद्र की लहरें आती रहती हैं॥

विज़गा पट्टम--यह भी छोटा सा बन्दर है॥

सलीम--बड़ा नगर है इस में लोहे की खानें हैं।

त्रिचनापली--यहां सिगरेट बनते हैं।

मदौरा--पुरानी राजधानी है।

ट्यूटी कौरन--दक्षिणी भारत में स्थापित है यह बन्दर है जिससे भारत और लंका में व्यापार होता है॥

कडालौर--ऐतिहासिक स्थान और बन्दर है॥

औटाकमन्ड--में अंग्रेज गर्म ऋतु में ठहरते हैं॥

मध्य प्रदेश व बरार।

पहिले यह देशी रियासतों में गिना जाता था परन्तु अब सरकार के आधीन है॥

सीमा—उत्तर में मध्यभारत पूर्व में मदरास बंगाल दक्षिण में हैदराबाद व मदरास, पश्चिम में बम्बई क्षेत्रफल पंजाब के बराबर है मनुष्य संख्या एक करोड़ ६० लाख से कुछ अधिक है हिन्दू अधिक हैं गोंड और भील पर्वतों में रहते हैं मरहटी और हिन्दी इन की भाषा है ।

धरातल, जल, वायु और उपज ।

यह देश पहाड़ी है नर्बदा गोदावरी, महानदी, और सोन इस को सींचते हैं जल और वायु गर्मियों में गर्म शर्दियों में शर्द वर्षा अधिक होने के कारण भूमि उपजाऊ है, रूई इस प्रांत की प्रसिद्ध है इस कारण से यहां रूई के कारखाने बनाये गये हैं ।

देशी रियासतें ।

इस में रियासतें बहुत हैं परन्तु विस्तार की रियासत प्रसिद्ध है ।

प्रसिद्ध नगर ।

नागपुर—राजधानी है व्यापारिक नगर है यहां लट्ठा बनता है ॥

वारदा—इस में कोयले की खाने हैं ॥

कांपटी—छावनी है ॥

अमरावती--में रूई की मंडी है ॥

एलचपुर—छावनी है ॥

जब्बलपुर--संगमरमर के लिये प्रसिद्ध है ॥

सागर—छावनी है ॥

अहाता बम्बई ।

सीमा--उत्तर में पंजाब व राजपूताना पूर्व में राजपूताना और मध्यप्रदेश दक्षिण में मैसूर व मदरास पश्चिम में अरब सागर व विलोचिस्तान ॥

क्षेत्रफल व मनुष्य संख्या--क्षेत्रफल पंजाब के $\frac{?}{?}$ भाग के बराबर है मनुष्य संख्या पंजाब के बराबर है। हिन्दू अधिक हैं मुसलमान, ईसाई पार्सी भी पाये जाते हैं इनकी भाषा मरहट्टी है ॥

धरातल व जल वायु और उपज ।

इस के तीन भाग हैं १-नीची भूमि का भाग जो समुद्र की भूमी के बराबर २-पश्चिमी घाट ३-दक्षिण की टेबल लाइन इस में नदी सिंध नर्बदा ताप्ती, बहते हैं, जल वायु भिन्न २ है सिन्ध के देशकी शुष्क है इस से दक्षिणी भाग की गर्म और नमी वाली है ऊंचे स्थानों पर शर्द है बारिश अच्छी होती है परन्तु गुजरात काठियावाड़ और सिन्ध में कम यहां रूई और गेहूं होते हैं।

व्यापार ।

इस में कराची बम्बई प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं इन से दूसरे देशों को माल भेजा जाता है और अन्य देशों से सूती ऊनी रेशमी कपड़े और धातु की वस्तुएं बाहर से आती हैं ।

राज्य ।

इस अहाते के चार भाग हैं उत्तरी मध्यम, दक्षिणी, और सिन्ध यह सारे गर्वनर के आधीन हैं ॥

देशी रियासतें ।

इन सब रियासतों को सरकार बम्बई ने सात भागों में बांटा हुआ है इन में से गुजरात में से काठियावार की रियासत सिन्ध में रियासत खैरपुर है ॥

अदन—गवर्नमेंट बम्बई के आधीन है यहां पर बिलायत से आने जाने वाले जहाज कोयला और रसद लेते हैं ॥

प्रसिद्ध नगर ।

बम्बई—राजधानी है भारत में दूसरी श्रेणी का नगर है यह सब से अच्छा बन्दर है यूरोप से नजदीक है । इस के पास द्वीप अलफैंएट में बड़े सुन्दर मन्दिर हैं ॥

सूरत—यह बड़ा पुराना नगर है पहिले पहल अंग्रजोने यहां पर कोठियां बनाई और इस में छोटे २ जहाज़ ठहरते हैं॥

भड़ोच—बन्दरगाह है ॥

अहमदाबाद—में मिट्टी के वर्तन और कागज के बड़े कारखाने हैं ॥

पूना—आरोग्यता का स्थान है और पेशवाओं की राजधाना थी ॥

महाबलेश्वर—आरोग्यता का स्थान है ॥

शोलापुर—किसी समय में बड़ा नगर था । अब रूई के कपड़े के बड़े कारखाने हैं ॥

अहमदनगर—यहां कालीन और पीतल के वर्तन बनते हैं॥

करांची—अच्छा बन्दर है पंजाब का गेहूं दूसरे देशों को जाता है ।

सक्खर—रेलके बड़े कारखाने हैं यहां पर झूलनापुल है॥

शिकारपुर—यहा पर व्यापारिक लोग रहते हैं ॥

दशी रियासतें ।

इस अहाते में ३६० के लगभग देशी रियासतें हैं कई छोटी हैं सब से बड़ी **बड़ौदा** की रियासत है कच्छ और खैरपुर की रियासतें भी इसी में हैं ॥

रियासत बड़ौदा का वर्णन ।

यह रियासत मरहटा राजा के आधीन है यहां के राजा बड़े भद्र पुरुष हैं अपनी प्रजा के लिये नई २ सलाहें सोचते रहते हैं हर एक बच्चे को दण्ड से पढ़ना पड़ता है और निर्मूल्य शिक्षा दी जाती है राजधानी बड़ौदा है बड़ा सुन्दर नगर है । अछूत जातियों का भी उद्धार किया है ॥

द्वीप अण्डमन व निकोबार ।

इन द्वीपों का प्रबन्ध चीफ कमिश्नर के आधीन है यहां भारत के आयुभर के कैदी भेजे जाते हैं । इसकी राजधानी पोर्ट बिलीअर है ॥

वह रियासतें जो सरकार को कर देती हैं ।

यह हैं कश्मीर, बिलोचिस्तान, राजपूताने की रियासतें, मध्य भारत की ऐजंटी, हैदराबाद, मैसूर, बिस्तार के अनुसार सब से बड़ी हैदराबाद, दूसरी कश्मीर, तीसरी मैसूर है ॥

१ कश्मीर की रियासत--यह वाइसराय के आधीन है और वाइसराय की ओर से रेजीडंट रहता है इस रियासत में अधिक मुसलमान रहते हैं हिन्दू कम यह हिन्दू रियासत पंजाब के उत्तर में स्थापित है भारत में यह एक सुन्दर

स्थान है जल वायु आरोग्यता वर्धक है गर्मियों में स्वर्ग होता है यहां पर मेवे केसर अधिक होते हैं, जंगलों से लकड़ियां आती ह यहां से माल दूसरे देशों को जाता है ॥

प्रसिद्ध नगर ।

श्रीनगर--रियासत की राजधानी है यहां पर कई स्थान देखने योग्य हैं रेशम के कपड़े का भारी कारखाना है महाराजा साहिब गर्मी में यहां रहते हैं ।

गिलगित—यहां फौजी स्थान हैं ।

बिलोचिस्तान ।

कुछ भाग अंग्रेजों के अधीन है जिसे ब्रटिश बिलोचिस्तान बोलते हैं यहां के निवासी मुसलमान हैं खान कल्लात प्रबन्ध करता है जो रेजीडएट से सलाह लेलेता है बागों में मेवे अधिक होते हैं ॥

प्रसिद्ध नगर ।

कोयटा--ब्रटिश बिलोचिस्तान की राजधानी है सीमा की रत्ता के लिये यहां बड़ी भारी छावनी है । अंगूर और सर्दे प्रसिद्ध हैं ॥

कल्लात-बड़ा नगर है ।

कोर्टसुलेमान लोरालाई प्रसिद्ध नगर है ॥

राजपूताना ।

पंजाब के दत्तिण पश्चिम का देश जिस में इक्कीस

देशी रियासतें हैं राजपूताना कहलाता है। यहां के स्वामी राजपूत हैं इस कारण यह नाम रक्खा गया। इस में टौंक का राज्य मुसलमानी है॥

सीमा—उत्तर पश्चिम में पंजाब उत्तर पूर्व में पंजाब व संयुक्त प्रदेश दक्षिण पूर्व में मध्य भारत दक्षिण पश्चिम में सिन्ध गुजरात।

क्षेत्रफल व मनुष्य संख्या—क्षेत्र फल पंजाब के बराबर है और मनुष्य संख्या ९७ लाख ५० हज़ार॥

धरातल जलवायु और उपज।

अर्वली पर्वत इस के दो भाग करता है एक पूर्वी दूसरापश्चिमी॥

पूर्वी भाग व पश्चिमी भाग की तुलना।

पूर्वी भाग	पश्चिमी भाग
१ भूमिऊंची और उपजाऊ है।	१ एक रेतला मैदान है।
२ कई नदियां हैं।	२ इस में एक नदी बहती है।
३ वर्षा के होने का पता नहीं लगता।	३ वर्षा की अधिक आवश्यकता रहती है॥
४ तालाबों से भूमि को सींचा जाता है कई प्रकार के अनाज पैदा होते हैं।	४ खेतों को नहीं सींच सकते
५ लोग शहरों में रहते हैं॥ जल वायु शुष्क है॥	५ अनाज कम होता है लोग अपना असबाब लिए फिरते हैं

राज्य ।

बड़ी २ रियासतें इस में यह हैं उदयपुर, जयपुर, भरतपुर, अलवर, कोटा, टौंक, बीकानेर, जोधपुर । हर एक रियासत में एक अंग्रेज स्वामी रहता है परन्तु सारी रियासतें एक गवर्नर जनरल के एजण्ट के आधीन हैं ॥

प्रसिद्ध नगर ।

अजमेर—राजधानी है इस में हिन्दूओं के बड़े मन्दिर हैं इस में राजाओं के लड़कों का महाविद्यालय है जयपुर, यहां पर शंगमरमर के पत्थर की शिल्प विद्या अच्छी होती है ।

जयपुर—उदयपुर की राजधानी है ॥

भरतपुर—प्रसिद्ध नगर है ।

बीकानेर—में वर्षा नहीं होती भूमि उजाड़ है ॥

नीमच—छावनी है ॥

सांभर—में नमक की मण्डी है ॥

आबू—में जैनियों का मन्दिर है ॥

मध्य भारत की रियासतें ।

इस में भी १४३ के लगभग छोटी बड़ी रियासतें हैं यह भी राजपूताने की नाईं एक एजण्ट के अधीन हैं ॥

क्षेत्र फल व मनुष्य संख्या--इस की संख्या ९३ लाख है क्षेत्रफल ७९ हज़ार वर्ग मील है ॥

धरातल व जल वायु और उपज ।

उत्तरी भाग की गर्म दक्षिणी की न शर्द न गर्म इस में रूई, गेहूं, गन्ना, तमाकू अधिक पाया जाता है मालवे में अफ़ीम होती है जो भारत में प्रसिद्ध है ॥

इस में बड़ी २ रियासतें हैं यहां ग्वालियर, जहां मरहट्टा जाति का राज्य है तानसेन गवैया हुआ है इस में उज्जैन प्रसिद्ध नगर है ।

भूपाल की रियासत--बेगम साहिबा के आधीन है।

रीवां--इस का क्षेत्रफल ग्वालियर के तुल्य है ॥

बुन्देलखण्ड--इस के पूर्व की ओर पन्ना की रियासत है हीरे पन्नों के लिए प्रसिद्ध है ॥

हैदराबाद की रियासत !

यह रियासत सब रियासतों में बड़ी है हाता बम्बई मद्रास और मध्य भारत से घीरी हुई है इस का ढलान पूर्व पश्चिम का है ॥

क्षेत्रफल व मनुष्य संख्या—मनुष्य संख्या १ करोड़ ३० लाख है हिन्दु अधिक हैं राजा मुसलमान है ॥

धरातल जल वायु और उपज ।

भूमि उपजाऊ है सरसों तेल निकालने के बीज व रुई अधिक होती है ॥

हैदराबाद—राजधानी है ॥

गोलकुंडा—यहां का हीरा प्रसिद्ध है ।

सिकन्दराबाद—बड़ी भारी छावनी है ।

एलोरा और अजंटा—दो प्रसिद्ध स्थान हैं ॥

असई—इतिहासिक नगर है अंग्रेजों ने मरहट्टों को वहां हराया था ॥

नदीर—सिक्खों का गुरुद्वारा है ॥

रियासत मैसूर ।

रियासत हैदराबाद से दुगुनी ऊंचाई पर है इस के चारों ओर अहाता मद्रास है ।

क्षेत्रफल व मनुष्य संख्या—३० हज़ार वर्ग मील है मनुष्य संख्या ५५ लाख है अधिक हिन्दू हैं जिन की भाषा किनारी है ।

धरातल जलवायु व उपज

भूमी भीतर की ऊंची है और ऊंची होने के कारण जलवायु न शर्द है न गर्म। दक्षिणी भाग में वर्षा अधिक होती है इस कारण लकड़ियों के जंगल पाये जाते हैं उत्तर में रूई, गन्ना, चावल, उत्पन्न होता है धातुओं में से सोना पाया जाता है॥

प्रसिद्ध नगर।

मैसूर—राजधानी है महाराजा साहिब यहीं निवास करते है॥

श्रीरंगपटम—प्राचीन राजधानी थी।

बंगलौर—छावनी है। रेजीडेण्ट यहां निवास करते हैं।

कोरग की रियासत।

मैसूर के दक्षिण पश्चिम में एक छोटा सी रियासत है यह हिन्दू राजा के आधीन थी अब मैसूर के रेजीडेण्ट के आधीन है। यहां कहवा, इलायची उत्पन्न होती है इस में प्रसिद्ध नगर मरकारा है।

स्वतन्त्र रियासतें।

१ **नैपाल**—यह पहाड़ी देश है इस का क्षेत्रफल ५४

हज़ार वर्ग मील है और मनुष्य संख्या ४० लाख है यहां के मनुष्यों को गोरखे कहते हैं सेना में भरती होते हैं।

धरातल, जल वायु और उपज।

इस में घागरा, गंडक, कोसी, सून नदी बहती है पर्वत हिमालय की ऊंची चोटी माउण्टऐवरेस्ट इस में है जलवायु पर्वतों की शीत और नीचे के स्थानों की गर्म है।

प्रसिद्ध नगर

खटमंडू–राजधानी है।

भूटान।

नैपाल से पूर्व को स्थापित है यहां की मनुष्य संख्या १ लाख के लगभग है। यहां के आदमी असभ्य हैं यहां की राजधानी पनाखा है।

अन्य देशीय राज्य।

फ्रान्सीसी राज्य के भाग—चन्द्रनगर हुगली नदी पर है।

२—पांडिचरी–कारोमंडल के तटपर। यहां फ्रांसीसी गवरनर रहता है।

३—कारीकल-कर्नाटक के तट पर है।

४ मही-मालाबार के तट पर है।

५—न्याऊं-गोदावरी नदी के तटपर है।

पुर्तगीजों के स्थान।

१—गोवा-बम्बई के तट पर है।

२—दमन-गुजरात के तट पर है।

द्यो—एक द्वीप है इन सबका क्षेत्रफल १ हज़ार वर्गमील है॥

लंका।

यह भारत से प्रबन्ध के अनुसार पृथक है परन्तु भूगोल के अनुसार इस देश से सम्बन्ध रखता है प्राचीन समय में यहां के राजा रावण ने सीता को हर लिया था और सीता के पति रामचन्द्र जी ने समुद्र पर पुल बांध कर इसका और इस के राज्य का नाश कर दिया जिसका अनुकरण दशहरे में होता है।

यह द्वीप हिन्दुस्तान के दक्षिण में है सरकार अंग्रेज बहादुर के अधिकार में है यहां के निवासी बौद्धमत वाले हैं यहां की जलवायु अच्छी है।

कहवा, दालचीनी और नारियल अधिकता से होते हैं बीच का भाग जंगलों से भरा है जहां हाथियों के झुंड के झुंड घूमा करते हैं।

प्रसिद्ध नगर ।

कोलम्बू—इसकी राजधानी है ।

कांडी—पहिले इसकी राजधानी और यहां पर बौद्धमत का सुन्दर मन्दिर है।

ट्रंकोमाली-दुनियां के बहुत अच्छे बन्दरगाहों में गिना जाता है ।

गेली—यह भी एक बन्दर है ।

भारत के प्राचीन और नवीन नगर बनने के कारण ।

१.—पुरानी राजधानियां जिन में राजा लोग निवास करते थे जैसे लखनऊ, देहली, आगरा ।

२—पवित्र स्थान जहां मनुष्य यात्रा के लिये आते थे जैसे बनारस, इलाहाबाद, अमृतसर, पुरी, गया।

३—नदी या व्यापार के मार्ग पर जैसे पटना, ढाका पेशावर, शिकारपुर ।

४-आज कल वर्तमान समय में व्यापार अन्य देशा से बढ़ गया है इस कारण बन्दर उन्नति पर है जैसे बम्बई, कलकत्ता, करांची ।

५--रेलों के बनने से बड़े जंकशन स्टेशनों पर और लाइन कई नगर उन्नति पर होगये हैं ।

६-छावनियों के बनने से भी जैसे रावलपिंडी, कोयटा मेरठ इत्यादि ।

७-आरोग्यता देने वाले स्थान-जैसे शिमला, पूना, नैनीताल इत्यादि ।

सरकार अंग्रेजी के आधीन भारत की उन्नति ।

सरकार अंग्रेज़ी के होने से देश में सुख है । नई ज़मीनें आबाद होती जाती हैं, पाठशालायें खुली हुई हैं । नहरें जारी हैं, रेल की सड़कें देश २ में जाल की तरह फैली हुई हैं महीनों का सफर दिनों में होता है डाक और तार में खबर जा सक्ती है दूसरे देशों से माल आता जाताहै लाग कल मंगवाकर शहरों में अपने कारखानें खोलने लग पड़े हैं ॥

प्रसिद्ध २ तीर्थ स्थान।

उत्तर में बदरिकाश्रम (बद्रीनारायण) उत्तर काशी, गंगोत्तरी, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, ऋषिकेश, हरिद्वार, मध्यभारत और संयुक्त प्रदेश में, सोरों, मथुरा, बृन्दावन, गोवरधन, महा-बन, गोकुल, मधुबन, नन्दग्राम, बरसाना, बिठूर, कन्नौज, अयोध्या, नैमिषारण्य, प्रयाग, बनारस, (बंगाल, बिहार में) गया जगन्नाथ पुरी, भुवनेश्वर, (हज़ारी बाग में पारसनाथ का मन्दिर) (दक्षिण में) रामेश्वर, श्रीरंग पट्टन, मदूरा, इत्यादि (पश्चिम में) द्वारिका, (गुजरात में, गिरनार जै-नियों का) आंबूपर्वत, (पंजाब में) अमृतसर सिक्खों का कांगड़ा में ज्वाला जी का मन्दिर, हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है।

प्रश्न।

१–द्वीप, झील, बन्दरगाह और खाड़ी और डेल्टा के लक्षण बताओ। उदाहरण दो।

२–भारतवर्ष की नदियें बहाव के अनुसार कितने प्रकार की हैं इन में से गंगा, सिन्ध का वर्णन करो और किनारे के प्रसिद्ध नगर बताओ।

३–कौनसी वस्तु किस २ बन्दरगाह के रास्ते बाहर

जाती है और भारत में व्यापार किस प्रकार से होता है ।

४—गेहूं करांची के रास्ते क्यों और देशों को जाता है कलकत्ते के रास्ते क्यों नहीं जाता ॥

५—पंजाब के पश्चिम की ओर क्या अधिक छावनियां बनाई गई हैं पंजाब में अरोग्यता वर्धक कौन २ से स्थान हैं ।

६—देहली राजधानी बनने से कलकत्ते को क्या हानि पहुंची है?

७—मदरास में कौनसी देशी रियासतें प्रसिद्ध हैं ।

८—लाहौर से बम्बई, लाहौर से कलकत्ता, लाहौर से कराची, लाहौर से देहली जाने में रास्ते में कौन २ से स्टेशन आयेंगे ।

९—भारत के राज्य की बाबत तुम क्या जानते हो ? और अन्य देशों के आधीन कौन से स्थान हैं ।

१०—निम्न लिखत क्या हैं कहां हैं क्यों मशहूर हैं ? अमृतसर, बनारस, हावड़ा, कानपुर, हिमालय, कुल्लर, सिन्ध सूरत, पूना ।

११—भारत का एक चित्र खींचो और पैदावार दिखाओ

१२—आसाम में बड़े २ नगर क्यों नहीं और संयुक्त प्रदेश आगरा व अवध में क्यों अधिक हैं ॥

* ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!! *

(५) यूरोप का वर्णन--वर्तमान समयानुसार मिडल, नारमल और ट्रेनिंग कालेज के विद्यार्थियों की परीक्षा के अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है । इस में परचों के नमूने भी दे दिये गये हैं । १०० पृष्ठ मूल्य ।-)

(६) अफरीका का वर्णन--यह कई पुस्तक पाठशालाओं में प्रचलित होगई है ॥ पृष्ठ ५४ मूल्य ≡)

(७) अमरीका का वर्णन आस्ट्रेलिया सहित--भी तैय्यार है ॥ ।-)

(८) भारतवर्ष का प्रश्नोत्तरी इतिहास प्रथम भाग--छप गया है । मूल्य ।)॥

(९) भारतवर्ष का प्रश्नोत्तरी इतिहास द्वितीयभाग-जाति हित के लिये लिखा गया है, एकबार अवश्य पढ़ के देखिये ॥ मूल्य ।)

लाहौर के प्रसिद्ध २ पत्रों और पाठशालाओं के अध्यापिकाओं ने इन पुस्तकों की बड़ी प्रसंशा की है ॥

भाषा प्रेमियों को यह पुस्तकें अवश्य देखनी चाहिये ॥

२०) रु० सैंकड़ा कमीशन इकट्ठी पुस्तकें लेने वाले को दियाजाता है

इनके अतिरिक्त अन्य पुस्तकें मिलने का पता :—

मास्टर अमरनाथजी अध्यापक,

डी० ए० वी० हाई स्कूल, लाहौर ।

यह पुस्तकें लाहौर के प्रसिद्ध पुस्तकें बेचने वालों से मिलसक्ती हैं।